Delhi Postal Regd. No. DL(C)-01/1272/2024, R.N.I. No. 720 14/99 Posted at LPC Delhi RMS, Delhi-6 Monday & Tuesday

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

संघीय समाचारों का साप्ताहिक मुखपत्र

terapanthtimes.com

नई दिल्ली • वर्ष 25 • अंक 21 • 26 फरवरी - 03 मार्च, 2024 • प्रत्येक सोमवार • प्रकाशन तिथि : 02-03-2024 • पेज 12 • ₹ 10 रुपये

एकांत स्थान में साधना करने का मूल्य है, पर भीड़ में रहकर भी एकांत का-सा अनुभव करना परम मूल्यवान है।
- आचार्य श्री भिक्षु

जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट का 14वां दीक्षांत समारोह

ज्ञान के समान कोई पवित्र चीज नहीं: आचार्य श्री महाश्रमण

वाशी, मुम्बई।
१९ फरवरी, २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने जैन विश्व भारती इंस्टीट्यूट के १४वें दीक्षांत समारोह में प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे जीवन में ज्ञान का बहुत महत्व है। जैन आगमों में भी ज्ञान की बातें आती हैं। ज्ञान से आदमी भावों को जानता है। श्रीमद् भगवत् गीता में ज्ञान के लिए कहा गया है कि ज्ञान के समान कोई पवित्र चीज नहीं होती है। ज्ञान को प्राप्त करना, ज्ञान की आराधना करना और उसके लिए समर्पित हो जाना अपेक्षित होता है। जैन आगमों में बताया गया है कि ज्ञान प्राप्ति में पाँच बाधाएं हैं- अहंकार, गुस्सा, प्रमाद, रोग और आलस्य। विद्यार्थी को चाहिए कि वह अहंकार मुक्त हो कर ज्ञान का अर्जन करे, अपने मन को ज्यादा से ज्यादा शांत, गुस्से से रहित रखने का प्रयास करे, प्रमाद-कषाय आदि से बचने का प्रयास करे और शरीर व मन में बीमारी न रहे। शरीर और मन स्वस्थ होगा तो ज्ञान प्राप्ति में बड़ा सहयोग मिल सकता है। विद्यार्थी आलस्य से बचकर सम्यक् पुरुषार्थी बने रहने का प्रयास करे तो प्रतिभा आदि का योग होने पर ज्ञान प्राप्ति में सफल हो सकता है। ज्ञान का बड़ा महत्व है, ज्ञान के साथ आदमी के भाव भी शुद्ध हो, आचरणों में अच्छे संस्कार रहें। संस्कार युक्त शिक्षा हो तो ज्ञान और आचार दोनों का विकास होने पर विद्यार्थी परिपक्व, सक्षम और उपयोगी बन सकता है।

शिक्षा संस्थान सरस्वती की आराधना के स्थल होते हैं। शिक्षक ज्ञान प्रदान करते हैं, विद्यार्थी ज्ञान ग्रहण करते हैं, इस प्रकार ज्ञान के आदान-प्रदान से मानो सरस्वती की आराधना हो जाती है।

जैन विश्व भारती संस्थान के प्रथम अनुशास्ता परम पूज्य गुरुदेव आचार्य तुलसी भी स्वयं एक प्रकार से शिक्षण देने वाले, अध्यापन करने वाले भी रहे और उन्होंने अणुव्रत के रूप में एक ऐसा कार्यक्रम चलाया कि कैसे आदमी अच्छा रहे, उसके जीवन में छोटे-छोटे अच्छे संकल्प रहें। अणुव्रत का अभी 75 वां वर्ष अणुव्रत अमृत महोत्सव वर्ष चल रहा है। अणुव्रत गीत का आंशिक संगान करते हुए पूज्यवर ने कहा कि इस अणुव्रत गीत में संयम और नैतिकता की प्रेरणा दी गई है। ऐसे गीतों को बार-बार गाने से भीतर के भावतंत्र से भी कुछ शुद्धता का संचार हो सकता है, साथ में संकल्प बल जुड़ जाए तो नैतिकता, संयम आदि अच्छे सिद्धांत व्यवहार गत भी हो सकते हैं।

विद्यार्थी परिश्रम करके उपाधि प्राप्त करे। परिश्रम के बिना अंक ज्यादा मिल भी जाए तो वे अंक ज्यादा महत्वपूर्ण नहीं होते हैं। विद्यार्थी में ज्ञान प्राप्ति के लिए निष्ठा होनी चाहिए कि मुझे अंक मिलें पर वे पढाई, परिश्रम के आधार पर मिलें, बिना परिश्रम के मुझे अंक नहीं चाहिए।

जैन विश्व भारती संस्थान मान्य विश्वविद्यालय में पढ़ने वाले विद्यार्थी, पढ़ाने वाले प्राध्यापक और संचालन करने वाले सदस्य ज्ञान के विकास के प्रति जागरूक रहें। साथ में ईमानदारी, अहिंसा, नैतिकता, संयम इन मूल्यों का भी विद्यार्थियों एवं संस्थान के हर सदस्य में अच्छा विकास हो सके, इस सन्दर्भ में भी प्रयास होता रहना चाहिए। दीक्षांत समारोह में ज्ञान प्राप्ति के सन्दर्भ में प्रमाणित किया जाता है। इसके साथ-साथ हमारा चरित्र, आचार और संस्कार भी अच्छे रहें। भले इसकी कोई डिग्री मिले न मिले पर व्यक्ति में इन अच्छाइयों के विकास का प्रयास भी होना चाहिए।

जैन विश्व भारती संस्थान के दूसरे अनुशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री महाप्रज्ञ ने प्रेक्षाध्यान का क्रम आगे बढ़ाया। अध्यात्म योग, जीवन-विज्ञान उपक्रम भी यथायोग्य विद्यार्थियों के प्रयोग में आते रहें। जीवन में बौद्धिक, भावनात्मक और शारीरिक विकास होता है तो विद्यार्थी सुयोग्य बन सकता है।

(शेष पृष्ठ २ पर)

> मैं जैन विश्व भारती संस्थान के विद्यार्थियों को कहना चाहूंगा कि के देश के नव निमार्ण में अपना योगदान दें। जिन-जिन विद्यार्थियों को डिग्री प्राप्त हुई उन्हें बहुत-बहुत बधाई देता हूं।"
>
> **-आचार्यश्री महाश्रमण**

जानकर पाप से बचने का प्रयास करें

ज्ञान का एक साधन है सुनना: आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, मुम्बई।
१८ फरवरी, २०२४

युगप्रधान अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी ने मुख्य प्रवचन कार्यक्रम में उपस्थित जनमेदिनी को संबोधित करते हुए कहा कि ज्ञान का एक साधन है सुनना और सुनने का साधन है कान। हमारी पांचों इंद्रियों में ज्ञान को प्राप्त करने में सम्भवतः श्रोत्र और चक्षु इन दो इंद्रियों का बड़ा योगदान होता है। अन्य इन्द्रियों से भी ज्ञान होता है। जैसे- घ्राणेन्द्रिय से गंध का ज्ञान, रसनेंद्रिय से रस का बोध और स्पर्शनेन्द्रिय से स्पर्श का ज्ञान होता है। इन तीनो इंद्रियों का भी योगदान है। परन्तु सुनकर के जो जानकारियां प्राप्त होती हैं और देखने से जो ज्ञान होता है, उतना ज्ञान शेष तीन इंद्रियों से उस रूप में संभवतः नहीं होता है।

मनुष्य के अलावा दिव्य शक्तियां, तिर्यंच प्राणी भी प्रवचन सुन सकते हैं। श्रवण शक्ति जब तक सुनने के लायक है तब तक उसका समुचित उपयोग कर लेना चाहिए। आदमी सुनकर कल्याण को जान लेता है और पाप को भी जान लेता है। जान कर पाप से बचने का प्रयास करें। कल्याण और पाप दोनों को आदमी सुनकर जानता है, फिर जो श्रेय है, अच्छा है, उसका समाचरण करना चाहिए। सुनने के लाभ को बताते हुए पूज्यवर ने आगे फरमाया कि श्रोता का श्रोतृत्व तभी सार्थक है जब कोई बोलने वाला वक्ता मिले। अच्छे वक्ता का अपना महत्व है तो अच्छे श्रोता का भी महत्व है। 'कैसे बोलना?' यह एक कला है तो 'कैसे सुनना?' यह भी एक कला हो सकती है। सुनने की कला का एक सूत्र है कि श्रोता सुनने के समय मौन रखे, बीच में नहीं बोले। दूसरा सूत्र है कि श्रोता में सुनने की उत्सुकता होनी चाहिए।

(शेष पृष्ठ २ पर)

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 फरवरी - 03 मार्च, 2024
2
terapanthtimes.com

मन में दुर्विचारों का प्रवेश होने देना मन का असंयम और मन की अनपेक्षित चंचलता को कम करना मन का संयम होता है।
-आचार्य श्री महाश्रमण

मन के केनवास पर उतारें अच्छे भाव: आचार्य श्री महाश्रमण

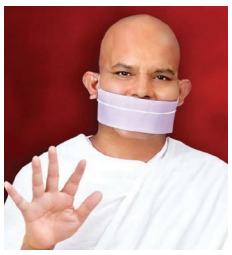

सम्यक् सोचें, सम्यक् स्मृति करें, सम्यक् कल्पना करें, हमारे मन में अच्छे विचार हों, ऐसा प्रयास करें। पूज्यवर ने मन में उठने वाले विचारों के बारे में बताते हुए आगे कहा कि ज्यादा पाप मन वाला प्राणी ही कर सकता है, ज्यादा धर्म भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है।
-आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, मुम्बई।
१७ फरवरी, २०२४

अणुव्रत अनुशास्ता परम पूज्य आचार्य श्री महाश्रमण जी ने अपने मुख्य प्रवचन में उपस्थित जनता को सम्बोध प्रदान करते हुए फरमाया कि हमारे पास शरीर, वाणी, मन, इंद्रियां, श्वास-उच्छ्वास हैं। शरीर से हम खाना-पीना-लिखना आदि अनेक कार्य करते हैं। वाणी से हम बोलते हैं, भाषण देते हैं, बातचीत कर लेते हैं, स्वाध्याय, जप, पढाई कर लेते हैं। मन से हम चिन्तन, स्मृति और कल्पना करते हैं।

भाव मन का ग्राह्य है और मन भावों का ग्राहक होता है। मन और भाव का सम्बंध होता है। मन सुमन भी बन सकता है और दुर्मन भी बन सकता है। पूज्यवर ने मन के बारे में विस्तार से बताते हुए आगे कहा कि जब मन में शिव संकल्प होते हैं, कल्याणकारी विचार होते हैं, सुंदर कल्पना होती है, स्मृति में कोई अच्छी चीज आती है, अच्छे भाव मन के केनवास पर उतरते हैं तो यह मन सुमन हो जाता है और गलत विचार, खराब चिंतन आदि हों

तो दुर्मन की स्थिति बन जाती है। मन से हम सोचते हैं, स्मृति आदि करते हैं। हम कैसे सोचें, कैसे स्मृति करें, कैसे कल्पना करें, यह एक प्रश्न है? उत्तर है- सोचें तो अच्छा सोचें, अच्छी स्मृतियां करें, अच्छी कल्पना करें। सम्यक् सोचें, सम्यक् स्मृति करें, सम्यक् कल्पना करें, हमारे मन में अच्छे विचार हों, ऐसा प्रयास करें। पूज्यवर ने मन में उठने वाले विचारों के बारे में बताते हुए आगे कहा कि ज्यादा पाप मन वाला प्राणी ही कर सकता है, ज्यादा धर्म भी मन वाला प्राणी ही कर सकता है। असंज्ञी, अमनस्क प्राणी न अधिक पाप कर सकते हैं न अधिक धर्म कर सकते हैं। कोई भी असंज्ञी प्राणी पहली नरक से ऊपर की नरकों में नहीं जा सकते।

कोई भी असंज्ञी प्राणी अनुत्तर विमान में भी पैदा नहीं हो सकते। समनस्क होना एक विकास का प्रमाण है। समनस्क वही प्राणी होता है जिसके पांचों इंद्रियां होती हैं। चतुरेंद्रिय तक के प्राणी तो अमनस्क ही होते हैं। हम मन का अच्छा उपयोग करने का प्रयास करें। एक विचार आता है जिससे हम दुःखी बन सकते है, एक विचार आता है जिससे हम प्रसन्न हो सकते हैं, चित्त शान्त हो सकता है। चिंतन -चिंतन का बड़ा अंतर हो सकता है। हम वस्तु स्थिति को जानने का, समझने का प्रयास करें। पूज्य प्रवर के प्रवचन के पश्चात तेरापंथ किशोर मण्डल वाशी के सदस्यों ने प्रस्तुति दी एवं संकल्प स्वीकार किए। कार्यक्रम का कुशल संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया। यथार्थ के आधार पर मन को शान्त रखने का प्रयास करें, कठिनाई है तो है, पर उससे दुखी नहीं बनें। आचार्यश्री महाप्रज्ञ जी की पुस्तक है- कैसे सोचें? सोचने के साथ भय, गुस्सा, लोभ आदि तत्त्व जुड़ जाते हैं तो चिन्तन विकृत हो सकता है। मोह कर्म के संयोग से मन योग मलिन बन जाता है। मोह कर्म अलग रहता है, उसका वियोग रहता है तो मन उज्ज्वल रहता है।

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

प्रथम पृष्ठ का शेष

ज्ञान के समान कोई पवित्र चीज नहीं: आचार्य श्री महाश्रमण

जैन विश्न भारती संस्थान परिवार आध्यात्मिक, नैतिक मूल्यों के उत्थान में भी सक्रिय बना रहे। कार्यक्रम की शुरुआत पूज्यप्रवर के नमस्कार महामंत्रोच्चार के साथ हुई। तदुपरांत समणी वृंद ने मंगलाचरण स्वरूप गीत की प्रस्तुति दी। कुलपति बच्छराज दुगड़ ने संस्थान की जानकारी प्रस्तुत की। कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल की आज्ञा से कुलपति ने दीक्षांत समारोह के शुभारंभ की घोषणा की। कुल सचिव प्रोफेसर बी. एल. जैन के निवेदन पर अलग-अलग विभागाध्यक्षों ने अपने-अपने विभाग से उपाधि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों को आमंत्रित किया। मुनि आलोक कुमार जी को भी योग एवं जीवन विज्ञान विभाग में पीएचडी की डिग्री प्रदान की गई। महाराष्ट्र के राज्यपाल रमेश बैस ने अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा- ₹जैन विश्व भारती संस्थान के 14वें दीक्षांत समारोह में सम्मिलित हो कर अत्यन्त प्रसन्नता हो रही है। यह दिन सभी स्नातकों के लिए विशेष रूप से यादगार दिन है क्योंकि आचार्यश्री महाश्रमण जी की शुभ उपस्थिति में सभी स्नातक अपनी उपाधि प्राप्त कर रहे हैं।

महाराष्ट्र संतों और समाज सुधारकों की भूमि रही है, यहां अनेक संतों का जन्म हुआ है। इसी भूमि पर सिख धर्म के गुरु गोविन्द सिंह जी ने अतिंम कुछ वर्ष बिताए थे। हमारा सौभाग्य है कि हमारे मध्य में जैन सन्त आचार्य श्री महाश्रमण जी विराजमान हैं। जैन धर्म भारत की पूरे विश्व को देन है।

जैन धर्म ने हमेशा शान्ति, अहिंसा और समन्वय का प्रसार किया है। महात्मा गाँधी के विचारों पर जैन धर्म शास्त्रों का गहरा प्रभाव था। आज जैन धर्म की शिक्षाएं विश्व के लिए पहले से कहीं अधिक प्रासंगिक हैं। जैन श्वेतांबर तेरापंथ संघ के प्रति मेरे मन में हमेशा से बहुत अधिक आदर और सम्मान रहा है। भारत की स्वतन्त्रता के बाद आचार्य तुलसी ने अणुव्रत आन्दोलन का सूत्रपात किया था जिसमें छोटी-छोटी प्रतिज्ञाओं के माध्यम से युवाओं के चरित्र निर्माण पर जोर दिया गया। उन्होंने राष्ट्र चेतना जगाने के लिए लाखों किलोमीटर की यात्रा की थी। आचार्य तुलसी के पश्चात तेरापंथ संघ का नेतृत्व विज्ञान विचारक आचार्य महाप्रज्ञजी ने किया। संस्थान के वर्तमान अनुशास्ता आचार्य श्री महाश्रमण जी के आध्यात्मिक अनुशासन निर्देशन में यह संस्था चेतनावान कर्णधारों का निमार्ण कर रही है। अपनी देशव्यापी यात्रा से पूज्य आचार्य महाश्रमण जी नैतिकता, सद्भावना और नशामुक्ति का प्रचार-प्रसार कर रहे हैं। जैन विश्व भारती संस्थान एक अनूठा विश्वविद्यालय है जहां उच्च शिक्षा के साथ-साथ युवाओं में संस्कारों का सिंचन भी होता है।

मुझे खुशी है कि आज के दीक्षांत समारोह में दो महत्वपूर्ण हस्तियों को संस्थान द्वारा मानद् डाक्टरेट की उपाधि प्रदान की जा रही है। के वी कामत तथा प्रोफेसर दयानंद भार्गव देश की बौद्धिक सम्पदा के बहुमूल्य रत्न हैं, मैं उन्हें हार्दिक बधाई देता हूं तथा उनका अभिनन्दन करता हूं। मैं जैन विश्व भारती संस्थान के विद्यार्थियों को कहना चाहूंगा कि के देश के नव निमार्ण में अपना योगदान दें। जिन-जिन विद्यार्थियों को डिग्री प्राप्त हुई उन्हें बहुत-बहुत बधाई देता हूं।

समारोह में संस्थान द्वारा जियो फाइनेन्सियल लिमिटेड के चेयरमेन श्री के. वी. कामत व जोधपुर युनिवर्सिटी के संस्कृत विभागाध्यक्ष प्रोफेसर डॉ. दयानंद भार्गव को डीलीट की मानद उपाधि प्रदान की गई। श्री कामत व डॉ. भार्गव के प्रशस्ति पत्र का वाचन डॉ. नलिन के. शास्त्री ने किया। दोनों मानद उपाधि प्राप्तकर्ताओं ने आचार्यश्री के समक्ष अपनी भावनाओं को प्रस्तुत किया। जैन विश्व भारती इंस्टिट्यूट के कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल ने अपने वक्तव्य में कहा कि हमारा सौभाग्य है कि आचार्यश्री महाश्रमणजी की मंगल सन्निधि में इस समारोह में संभागी बन रहे हैं। परम पूजनीय आचार्यश्री तुलसी की दूरगामी दृष्टि के फलस्वरूप इस संस्थान को मान्य विश्वविद्यालय के रूप में स्थापित किया गया। आचार्य श्री का चिंतन था कि मूल्यपरक शिक्षा के बिना अच्छे मानव का निर्माण संभव नहीं हो सकता। यह संस्थान अनेक कार्यों में आगे बढ़ रहा है। इसे आचार्यश्री का निरंतर आशीर्वाद प्राप्त होता रहे। कार्यक्रम का संचालन कुल सचिव प्रोफेसर बी. एल. जैन ने किया।

ज्ञान का एक साधन है सुनना: आचार्यश्री महाश्रमण

तीसरी बात है कि सुनने के साथ समीक्षा बुद्धि होनी चाहिए। चौथा लक्षण है कि अच्छी बातें सुनने को मिले तो उसे हृदयंगम करे, अच्छी सामग्री का संग्रहण करे और उन्हें सुरक्षित रखने का प्रयास करें। हम अच्छे श्रोता बनेंगे तो हमारा सुनना सार्थक हो सकेगा। अणुव्रत अमृत महोत्सव के संदर्भ में अणुव्रत अनुशास्ता ने गीत का संगान करवाया। समणी चैतन्यप्रज्ञाजी द्वारा संकलित व जैन विश्व भारती द्वारा प्रकाशित पुस्तक 'कॉन्सियशनेस इन साइंस एण्ड जैन फिलोसफी' को जैन विश्व भारती के पदाधिकारियों ने आचार्यश्री के समक्ष लोकार्पित किया। इस संदर्भ में समणी चैतन्यप्रज्ञाजी ने अपनी प्रस्तुति दी।

आचार्यश्री ने उन्हें पावन आशीर्वाद प्रदान करते हुए फरमाया कि इस पुस्तक में विज्ञान और दर्शन की बात है। दर्शन का अपना महत्व होता है, विज्ञान का अपना महत्व होता है। ये साइंस और फिलोसॉफी के संदर्भ में चर्चा, दोनों एक दूसरे के सहयोगी बनें। आज सूचना प्राप्त हुई कि दिगम्बर परम्परा के आचार्य विद्यासागर जी का महाप्रयाण छत्तीसगढ़ में हो गया। आचार्य विद्यासागर जी दिगम्बर समाज में ख्यातनामा, प्रसिद्ध और चिंतनशील व्यक्तित्व थे। मेरा मिलना तो साक्षात् उनसे नहीं हुआ पर कभी-कभी उनका फोटो किताब आदि में जरूर देखा होगा। उनका देहावसान हो गया। उनकी आत्मा के प्रति हमारी आध्यात्मिक मंगलकामना है कि उनकी आत्मा मोक्षश्री का शीघ्र वरण करें और उनके अनुयायी अध्यात्म पथ पर आगे बढ़ते रहें।

160 वें मर्यादा महोत्सव के विविध कार्यक्रम

जसोल

विनयशीलता व कृतज्ञता से जीवन श्रेष्ठ बनता है। मर्यादा जीवन का श्रृंगार है, विकास का आधार हैं। विशुद्ध आचरण से ही ज्ञान की शोभा होती है। यह विचार साध्वी रतिप्रभा जी ने पुराने ओसवाल भवन में आयोजित 160वें मर्यादा महोत्सव कार्यक्रम को संबोधित करते हुए व्यक्त किये। उन्होंने कहा कि आचार्यश्री भिक्षु के पवित्र कर कमलों से लिखा हुआ मर्यादा पत्र तेरापंथ धर्म संघ का छत्र है। साध्वी कलाप्रभा जी ने कहा कि मर्यादा में चलने वाला साधक अपनी आत्मा को निर्मल व उज्जवल बनाता है। मर्यादाओं का एक अनूठा पर्व मर्यादा महोत्सव है। साध्वी मनोज्ञयशा जी ने कहा कि मर्यादा संयम की सुरक्षा है। मर्यादा ही संघ को फलवान बनाती है। साध्वी पावनयशा जी ने भी मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में अनेक विशेष बातों का उल्लेख किया। इस अवसर पर साध्वीवृन्द ने मर्यादावली का वाचन किया। कार्यक्रम में सिवांची मालाणी तेरापंथ संस्थान अध्यक्ष डूंगरचंद सालेचा, नैनमल कोठारी, ज्ञानशाला प्रभारी संपतराज चैपड़ा, प्रवीण भंसाली, तेयुप उपाध्यक्ष ललित सालेचा सहित प्रबुद्ध वक्ताओं ने अपने विचार व्यक्त किए। उपासिका लीला देवी सालेचा सहित ग्रुप द्वारा एक रोचक परिसंवाद की प्रस्तुति दी गई। तेरापंथ महिला मंडल व तेरापंथ कन्या मंडल द्वारा सामूहिक गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा मंत्री कातिलाल ढ़ेलडिया ने किया।

सचिन, गुजरात

मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम में उपस्थित विशाल जनमेदिनी को संबोधित करते हुए मुनि कुलदीपकुमार जी ने कहा- 'आचार्य भिक्षु ने अपने समय में साधु संस्था में व्याप्त शिथिलाचार के सामने विरोध का बिगुल फूंका एवं संघ से पृथक होने का निर्णय लिया। उन्होंने संघ से अभिनिष्क्रमण कर दिया और अकेले चल पड़े। उनके मार्ग में अनेक संकट आए, विघ्न आए, उनका बहिष्कार किया गया। उन्हें भिक्षा भी नहीं दी जाती थी। पांच वर्ष तक तो पर्याप्त आहार पानी भी नहीं मिला। पन्द्रह वर्षों के बाद जब उन्होंने देखा कि उनके सिद्धांत लोगों में स्वीकृत होने लगे हैं, लोग उनके मार्ग का अनुसरण करने लगे हैं तब उन्होंने संघ के सुचारू संचालन के लिए मर्यादाओं का निरूपण करना शुरू किया। उन्होंने केवल मर्यादाएं ही नहीं बनाई, उन मर्यादाओं को पहले अपने ऊपर लागू किया और बाद में सभी साधु साध्वियों की लिखित सहमति ली, उनके हस्ताक्षर करवाए। आचार्य भिक्षु द्वारा प्रस्थापित मर्यादाओं का आज भी तेरापंथ धर्मसंघ में अक्षरशः पालन होता है। इन्हीं मर्यादाओं के आधार पर तेरापंथ धर्मसंघ विकास के नए-नए शिखरों पर पहुंच रहा है। वास्तव में परिवार हो या समाज, संघ हो या राष्ट्र मर्यादा और अनुशासन ही उसके विकास के आधारभूत तत्व होते हैं।'

मुनि कुलदीपकुमार जी ने अपने सहवर्ती संत मुनि मुकुलकुमार जी की जन्मभूमि सचिन में आयोजित इस समारोह में उनके अनुशासन, कर्तव्य निष्ठा और सेवा भावना की मुक्त कंठों से प्रशंसा की। उन्होंने कहा- 'मुनि मुकुलकुमार जी की जन्मस्थली में हम आए हैं। मुनि मुकुलकुमार जी अत्यंत विनम्र और विनीत संत हैं। उन्होंने धर्म ग्रंथो का अच्छा अध्ययन किया है। इनके संसारपक्षीय पिता राजमल कालिया धर्मसंघ के प्रति पूर्ण समर्पित श्रावक हैं। मैं उनके आध्यात्मिक विकास के लिए मंगल भावनाएं प्रेषित करता हूं। यहां का जैन समाज भी जैनत्व के प्रति निष्ठावान समाज है। यहां के जैन समाज ने जैन एकता का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया है। सकल जैन समाज द्वारा मर्यादा महोत्सव का आज का आयोजन हुआ है, वह अपने आप में विशेष महत्वपूर्ण है।'

मुनि मुकुल कुमार जी ने कहा- 'इतिहास इस बात का साक्षी है कि मर्यादाएं हमेशा व्यक्ति की सुरक्षा करती है। जब तक सीता माता लक्ष्मण रेखा के अंदर रहे तब तक रावण जैसा महाबली भी उनका अपहरण नहीं कर सका। जब-जब मर्यादाओं की लक्ष्मण रेखा का उल्लंघन हुआ है, सुरक्षा भी समाप्त हुई है। मर्यादाओं का पालन उन्नति और विकास का राजपथ है।' उन्होंने कहा- 'मुनिश्री कुलदीप कुमार की निश्रा में रहकर मैंने बहुत कुछ सीखा है। उनका मुझ पर अप्रतिम वात्सल्य रहा है। उन्होंने मेरे संदर्भ में अनेक बातें बताई है, यह मुनिश्री की विशेष कृपा और प्रमोद भावना का ही द्योतक है। उनके प्रति मैं कृतज्ञता व्यक्त करता हूं।'

अणुव्रत विश्व भारती के गुजरात प्रभारी अर्जुन मेड़तवाल, तेरापंथी सभा उधना के अध्यक्ष बसंतीलाल नाहर, तेरापंथी सभा सचिन के अध्यक्ष सुखलाल खमेसरा, स्थानकवासी समाज के अध्यक्ष सागरमल बरलोटा, पीयूष ओस्तवाल, जीनल ओस्तवाल, तेरापंथी सभा सचिन के पूर्व अध्यक्ष राजमल काल्या आदि ने अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ कन्या मंडल, ज्ञानशाला, चंदनबाला महिला मंडल आदि ने भी गीत, वक्तव्य तथा परिसंवाद द्वारा रोचक प्रस्तुति दी। मंगलाचरण तेरापंथ महिला मंडल सचिन ने एवं आभार ज्ञापन पिंटू मुणोत ने किया। कार्यक्रम का संचालन तेरापंथी सभा उधना के उपाध्यक्ष मुकेश बाबेल ने किया। अंत में संघ-गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कालू

तेरापंथ भवन में साध्वी उज्जवलरेखा जी के सान्निध्य मे तेरापंथ धर्मसंघ का महाकुंभ 160वां मर्यादा महोत्सव मनाया गया। बसंत पंचमी के दिन प्रारभ होने वाले इस त्रिदिवसीय महामहोत्सव के दूसरे दिन का मंगल शुभारंभ 'भीखणजी स्वामी भारी मर्यादा बांधी' गीत के संगान से हुआ। साध्वी उज्जवलरेखा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि जैन श्वेतांबर तेरापंथ धर्मसंघ के आद्य अनुशास्ता आचार्यश्री भिक्षु हुए हैं। आचार्यश्री भिक्षु ने संघ के कुशल संचालन के लिए अनेक मर्यादाएं बनाई है। हमें जितनी स्वतंत्रता चाहिए उससे भी अधिक हम परतंत्र हैं। हर व्यक्ति मन से, भावों से, इंद्रियों से परतंत्र हैं। कोई भी यह सोचे कि मैं स्वतंत्र ही रहूं तो ऐसी कल्पना नहीं हो सकती। स्वतंत्रता और परतंत्रता दोनों साथ चलती हैं। आचार्यश्री भिक्षु ने इस तेरापंथ धर्मसंघ को मर्यादाओं का जो छत्र दिया है, वह हम सबके विकास का आधार है। जहां पर मर्यादा है वहां पर शान्ति व व्यवस्था है। हम मर्यादा की रक्षा करेंगे तो मर्यादा हमारी रक्षा करेगी। मर्यादा को हम महत्व देंगे तो मर्यादा हमें महत्व देगी। अग्रण्य साध्वी प्रांजलप्रभा जी ने कहा कि विनय का अर्थ अनुशासन, मर्यादा है। मर्यादा एक कवच है, मर्यादा पतंग की डोर है, मर्यादा संगठन की पहली नींव है। आचार्य भिक्षु के मर्यादा बनाने के पीछे दो महत्वपूर्ण दृष्टिकोण रहे हैं- पहला व्यक्तिगत स्वतंत्रता की सुरक्षा करना और दूसरा अनुशासन की श्रृंखला ना टूटे। मर्यादाओं में रहकर ही हम जीवन का विकास कर सकते हैं। सभी साध्वियों ने सामूहिक गीत का संगान किया। तेरापंथ महिला मण्डल द्वारा गीतिका की प्रस्तुति दी गई। सभा अध्यक्ष बुद्धमल लोढ़ा ने अपने विचार व्यक्त किये। संघ गान के साथ कार्यक्रम का समापना हुआ।

रायपुर

स्थानीय तेरापंथ अमोलक भवन में सुबह 9 से 10 बजे तक 160वें मर्यादा महोत्सव का विशेष आयोजन हुआ। तेरापंथ युवक परिषद् के अंतर्गत सामायिक करवाई गई। वक्ताओं द्वारा बताया गया कि आचार्यश्री भिक्षु द्वारा रेखांकित जिन मर्यादाओं पर तेरापंथ धर्मसंघ वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी की सन्निधि में नित नए प्रगति पथ पर गतिमान हो रहा है, उन्हीं मर्यादाओं के प्रतिपादन दिवस माघ शुक्ल सप्तमी के दिन मर्यादा महोत्सव के महाकुंभ का आयोजन हो रहा है। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन तेरापंथी सभा मंत्री वीरेंद्र डागा द्वारा किया गया। आयोजन में ज्योति डागा, तेमम अध्यक्षा नेहा जैन व मंत्री मधुर बच्छावत, तेयुप अध्यक्ष निर्मल गांधी व कोषाध्यक्ष सुशील डागा व टीपीएफ मंत्री अरुण सिपानी, भगवान महावीर जन्म कल्याणक महोत्सव समिति-2024 के कार्यकारी अध्यक्ष अमरचन्द बरलोटा सहित धर्मनिष्ठ श्रावक-श्राविकाओं की गरिमामय उपस्थिति रही।

साउथ, कोलकाता

मुनि जिनेशकुमार जी के सान्निध्य मे 160वें मर्यादा महोत्सव समारोह का भव्य आयोजन हुआ। इस अवसर पर उपस्थित जन समूह को संबोधित करते हुए मुनि जिनेशकुमार जी ने कहा- 'संस्कृति, संस्कार और साधना की पृष्ठभूमि को सुदृढ़ बनाने वाला मर्यादा महोत्सव तेरापंथ की संस्कृति का परिचायक है। यह अनुशासन, मर्यादा, संगठन और एकता का प्रतीक है। यह तेरापंथ का कुंभ है। यह धर्मसंघ का अभिनव कल्प प्रयोग है। आचार्यश्री भिक्षु द्वारा निर्मित मर्यादाओं के आधार पर चतुर्थ आचार्य जयाचार्य ने वि.सं. 1921 बालोतरा में मर्यादा महोत्सव का शुभारम्भ किया।' मुनि जिनेशकुमार जी ने आगे कहा कि जैसे मंदिर का अग्रभाग कलश से सुशोभित होता है, मस्तक की शोभा मुकुट से, फूल की शोभा परिमल से होती है, वैसे ही संघ की शोभा मर्यादा से होती है। मर्यादा अमृत है, मर्यादा नींव है, मर्यादा आत्म संयम का दीप है। मर्यादा जीवन का संस्कार व श्रृंगार है। मर्यादा की महक जीवन के हर पल, हर छण को खुशनुमा बना देती है। चाँद, तारे, सूरज, समुद्र आदि सभी अपनी मर्यादा में रहते हैं, इसलिए उनका मूल्य है। व्यक्ति भी मर्यादा में रहता है तो उसका मूल्य बढ़ जाता है। मुनि परमानंद जी ने कहा कि श्रद्धा, समर्पण, विनय, विवेक, आज्ञा और अनुशासन के आश्वास का महान अवसर है-मर्यादा महोत्सव। मर्यादाओं के पालन से व्यक्ति की उन्नति होती है। इस अवसर पर बाल मुनि कुणालकुमार जी ने सुमधुर गीत का संगान किया। स्वागत भाषण साउथ कलकता तेरापंथी सभा के मंत्री कमल सेठिया ने दिया। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल की संगठन मंत्री रमण पटावरी, मित्र परिषद के मंत्री अशोक बैंगानी, तेरापंथ युवक परिषद साउथ कलकता के अध्यक्ष राकेश नाहटा, तेरापंथ महिला मंडल, साउथ कोलकाता की अध्यक्षा पद्मा कोचर, तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, साउथ कोलकाता के अध्यक्ष प्रवीण सिरोहिया, महासभा के पूर्व महामंत्री तरूण सेठिया ने अपने विचार व्यक्त किये। मित्र परिषद सदस्यों द्वारा मुनिश्री को तिथि दर्पण एवं तिथि पत्रक भेंट किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ तेरापंथ महिला मंडल, साउथ कोलकाता के मंगलाचरण से हुआ। आभार ज्ञापन साउथ कोलकाता सभा के सहमंत्री कमल किशोर कोचर ने व संचालन मुनि परमानंद जी ने किया। इस अवसर पर बृहत्तर कोलकाता से अच्छी संख्या में श्रद्धालु उपस्थित रहे।

हुबली

साध्वी संयमलता जी एवं साध्वी उदितयशा जी के सान्निध्य में उत्साह और उमंग के साथ उत्तर कर्नाटक स्तरीय मर्यादा महोत्सव के कार्यक्रम का आयोजन किया गया। आचार्यश्री महाश्रमण जी के सन् 2020 के ऐतिहासिक हुबली मर्यादा महोत्सव के बाद आज फिर मर्यादा महोत्सव का आयोजन साध्वीद्वय के सान्निध्य में हुआ। साध्वी संयमलता जी ने अपने

न्यायालय की प्रतिष्ठा और गरिमा बनाए रखने के लिए अपेक्षित है कि न्यायाधीशों के मन में सच्चाई के प्रति निष्ठा बनी रहे।
-आचार्य श्री महाश्रमण

160 वें मर्यादा महोत्सव के विविध कार्यक्रम

वक्तव्य में फरमाया कि तेरापंथ धर्मसंघ में आज्ञा ही तप है, आज्ञा ही संयम है। इस संघ में गुरु आज्ञा के बिना एक पत्ता भी नहीं हिल सकता। साध्वीश्री ने मर्यादा को परिभाषित करते हुए फरमाया कि जो बिखराव को समेटती है, जो अनुशासनहीनता पर अंकुश लगाती है, जो शक्तियों को सही दिशा प्रदान करती है, जो अनुशासन से जीवन को संवारती है। संघ-संगठन के संदर्भ में जहां इच्छाओं का समर्पण सामुदायिक चेतना का विकास हो, उसे हम मर्यादा कहते हैं। मर्यादा और अनुशासन ही तेरापंथ धर्मसंघ का प्राण है। साध्वी उदितयशा ने फरमाया मर्यादा के निर्माता, मर्यादाएं और मर्यादाओं का पालन करने वाले, इन तीनों में मर्यादाओं का पालन करने वालों का महत्वपूर्ण स्थान है। कार्यक्रम की शुरुआत साध्वीवृंद ने मर्यादा गीत के संगान से की। 'तेरापंथ की कहानी साध्वी वृंद की जुबानी' की प्रस्तुति साध्वी मनीषाप्रभा, साध्वी भव्ययशा, साध्वी रौनकप्रभा और साध्वी शिक्षाप्रभा ने शानदार रूप से प्रस्तुत किया। साध्वी संगीतप्रभा ने आचार्य भिक्षु के प्रति भावपूर्ण अभिव्यक्ति दी। तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों ने ओजस्वी स्वरों के साथ गीत का मंगल संगान किया। साध्वी वृंद ने सुमधुर गीतिका से वातावरण को संगीतमय बना दिया। उत्तर कर्नाटक और हुबली से समागत श्रावक श्राविकाओं का स्वागत करते हुए हुबली तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमोलकचंद बागरेचा ने अपने भावों को व्यक्त किया। तेरापंथी सभा के मंत्री केसरीचंद गोलेछा ने वासुपूज्य भवन के ट्रस्ट मंडल का आभार एवं सम्मान किया। तेरापंथ युवक परिषद हुबली के अध्यक्ष विशाल बोहरा ने गुरुदेव के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित करते हुए सभी कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मार्दवश्री जी ने किया।

राउरकेला

तेरापंथ महिला मंडल राउरकेला ने स्थानीय तेरापंथ भवन में 160वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन किया। नमस्कार महामंत्र के उच्चारण के साथ कार्यक्रम प्रारंभ हुआ। मंडल की बहिनों ने मंगलाचरण किया। ज्ञानशाला के बच्चों ने आचार्य भिक्षु की मर्यादाओं और अनुशासन पर आधारित प्रसंगों को लघु नाटिका के रूप में प्रस्तुत किया। स्नेहलता चोरड़िया, संपत भंसाली ने मर्यादाओं पर अपने विचार प्रकट किए एवं आचार्यों के जीवन के कुछ प्रसंगों को सभी के सम्मुख प्रस्तुत किया। आचार्य भिक्षु पर आधारित गीतिकाओं एवं तेरापंथ प्रबोध के पद्यों पर बहुत ही रोचक अंताक्षरी का कार्यक्रम भी रखा गया। सभी बहिनों ने बड़े उत्साह के साथ भाग लिया। विजेता रहे ग्रुप को पुरस्कृत किया गया। कार्यक्रम का संचालन विनीता जैन तथा कोमल डोसी ने किया। बहिनों की अच्छी उपस्थिति रही।

सरदारपुरा

श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ धर्मसंघ के महत्वपूर्ण पर्व 160वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन शहर के सरदारपुरा स्थित मेघराज तातेड़ भवन में किया गया। शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी, साध्वी गुप्तिप्रभा जी, साध्वी कुंदनप्रभा जी के सान्निध्य में आयोजित हुए इस कार्यक्रम का शुभारंभ साध्वीश्री के द्वारा नमस्कार महामंत्र के सम्मुच्चारण से हुआ। कार्यक्रम का मंगलाचरण कवि जैन ने सुंदर गीतिका के माध्यम से किया। साध्वी कुसुमलता ने मर्यादा के महत्व को उजागर करते हुये कहा कि हम चिंतन करें मर्यादा क्या है? साथ ही "यही है जीने का विज्ञान" गीत का संगान किया। साध्वी जगतयशा जी ने अपने वक्तव्य में फरमाया कि मर्यादा, अनुशासन और समर्पण तेरापंथ धर्मसंघ की पहचान है। साध्वी विद्युतप्रभा जी ने फरमाया कि आचार्यश्री भिक्षु ने मर्यादाओं का निर्माण किया और उन्हीं मर्यादाओं को महोत्सव का रूप देने वाले चतुर्थ आचार्य जीतमल जी थे।

आचार्यश्री भिक्षु ने दूरदर्शी चिंतन कर धर्मसंघ का संविधान लिखा, उसी का परिणाम है आज भी एक गुरु की आज्ञा सर्वोपरि है। साध्वीवृन्द ने सामूहिक गीतिका 'जय मर्यादा जय शासन, जय मर्यादा जय अनुशासन' की जोशपूर्ण प्रस्तुति से मर्यादा महोत्सव की महत्ता को बताया। साध्वी गुप्तिप्रभा जी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि आचार्य भिक्षु का सपना था सत्य का साक्षात्कार करना और संकल्प था जिनवाणी के प्रति अपनी आस्था को समर्पित करना। आचार्य भिक्षु के पुरुषार्थ ने जो लिखा उसी का परिणाम यह मर्यादा महोत्सव है। उनके साहस और पुरुषार्थ की फलश्रुति है यह अनुशासित और मर्यादित धर्मसंघ। शासनश्री साध्वी कमलप्रभा जी ने अपने पावन पाथेय में कहा कि मर्यादाओं के निर्माता आचार्य भिक्षु थे और मर्यादा के सतत संचालक वर्तमान आचार्यश्री महाश्रमण जी हैं। आचार्यश्री भिक्षु लौह पुरुष थे, जिन्होंने ऐसा मजबूत और पावन संविधान लिखा, जिसकी सुदृढ नींव पर यह तेरापंथ धर्मसंघ का विशाल भवन खड़ा है। ऐसा धर्मसंघ जिसकी दुनिया में अपनी विलक्षण पहचान है, जिसकी श्रद्धा, सेवा, समर्पण का त्रिवेणी संगम अद्वितीय है। कार्यक्रम में तेरापंथी सभा अध्यक्ष सुरेश जीरावला, महिला मंडल अध्यक्षा दिलखुश तातेड़, नैनमल तातेड़, रीना सिंघवी ने वक्तव्य द्वारा अपने भावों की प्रस्तुति दी। तेरापंथ महिला मंडल सरदारपुरा तथा तेरापंथ युवक परिषद सरदारपुरा द्वारा गीतिका का संगान किया गया। कार्यक्रम का संचालन साध्वी मौलिकयशा जी व साध्वी भावितयशा जी ने किया। सामूहिक संघ गान के संगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

कूच बिहार, बंगाल

मुनिश्री प्रशांतकुमार जी एवं मुनिश्री कुमुदकुमार जी के सान्निध्य में 160 वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन हुआ। जनसभा को संबोधित करते हुए मुनिश्री प्रशांतकुमार जी ने कहा- 'पूरी दुनिया में एकमात्र तेरापंथ धर्मसंघ है जो मर्यादाओं का महोत्सव मनाता है। यह अपने आप में अनूठा आकर्षक एवं प्रेरणादायक महोत्सव है। आज एक ओर जहां हर क्षेत्र में अनुशासन और मर्यादा भंग हो रही है, वहीं तेरापंथ धर्मसंघ मर्यादा पालन में अपनी कटिबद्धता प्रदर्शित करते हुए गरिमापूर्ण ढंग से मर्यादाओं का सम्मान करता है। अनुशासन ही तेरापंथ का मूल मंत्र है। जैन आगमों के अनुसार मुनि चर्या का पालन करते हुए तेरापंथ धर्मसंघ के साधु-साध्वियों ने विकास के अनेक नए आयाम खोले हैं। इसका मूल आधार है एक गुरु का अनुशासन। आचार्य भिक्षु आत्मा साधना के लिए पूर्णतया समर्पित थे। इस मार्ग में आने वाली बाधाओं, कष्टों को झेलना उन्हें मंजूर था लेकिन सत्य की जो राह पकड़ी उससे हटना स्वीकार नहीं था। आचार्यश्री भिक्षु ने मर्यादाओं को किसी पर थोपा नहीं, सबकी सहर्ष स्वीकृति होने के बाद ही इन मर्यादाओं को संघ में लागू किया। आचार्य भिक्षु अपना कोई नया संघ बनाना नहीं चाहते थे, किंतु जिस राह पर वे चले लोग स्वतः उनके साथ चल पड़े और संघ निर्मित हो गया। जनसाधारण ने ही इस संघ का नामकरण कर दिया तब आचार्य भिक्षु ने इसी नामकरण को सहज स्वीकार करते हुए उसे नया अर्थ प्रदान किया। तेरापंथ धर्मसंघ में सेवा को भी अत्यधिक महत्व दिया गया। शारीरिक दृष्टि से अक्षम अथवा बीमार, वृद्ध साधु साध्वी की सेवा की व्यवस्था यहां बेजोड़ है, जो इस संघ को महानता के शिखर पर पहुंचने वाली है। मुनि कुमुदकुमार जी ने कहा- अनुशासन और मर्यादा का पालन ही मर्यादा का सबसे बड़ा सम्मान है। तेरापंथ संघ में अनुशासन को सर्वोपरि महत्व दिया गया। लगभग 260 वर्ष पूर्व आचार्य भिक्षु ने जो मर्यादाएं बनाई, उनमें आज तक कोई परिवर्तन नहीं हुआ और उनका पालन करने को पूरा संघ तत्पर रहता है। तेरापंथ संघ में अहंकार और ममकार विसर्जन की जन्म घुट्टी मिलती है। यही वजह है कि शिष्य-शिष्या बनाने की होड़ से मुक्त होकर तेरापंथ धर्म संघ साधना की गहराई और विकास के शिखरों को छूने में सफल रहा है। एक गुरु और एक विधान यह तेरापंथ की पहचान है। जहां अनुशासन और मर्यादा निष्ठा होती है वही शुद्ध साधना हो सकती है। आचार्यश्री का निर्णय एवं उनकी दृष्टि ही सर्वोपरि होते हैं। हाजरी वाचन के पश्चात् दोनों ही संतों ने खड़े होकर लेखपत्र का उच्चारण किया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन राजकुमार बोथरा ने किया। तेरापंथ महिला मंडल के मंगलाचरण से कार्यक्रम का शुभारंभ हुआ। स्वागत वक्तव्य तेरापंथी सभा अध्यक्ष राजेंद्र नौलखा ने दिया। सिलीगुड़ी सभा मंत्री मदन संचेती, सिलीगुड़ी महिला मंडल, कूच बिहार तेयुप, महिला मंडल, दिगम्बर जैन समाज, साधुमार्गी जैन समाज, ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी, कोकराझार महिला मंडल एवं तेयुप, धुबड़ी महिला मंडल, गौरीपुर महिला मंडल आदि ने पृथक-पृथक रूप से विचारों एवं गीतों की प्रस्तुतियां दी। आभार ज्ञापन प्रदीप दुगड़ ने किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि कुमुदकुमार जी ने किया। संघ गान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ।

सिटीलाइट, सूरत

160वें मर्यादा महोत्सव का आयोजन चतुर्विध धर्मसंघ की समुपस्थिति में भव्यता के साथ आयोजित हुआ। इस अवसर पर बड़ी संख्या में साधु-साध्वी उपस्थित हुए।

समारोह को संबोधित करते हुए मुनि उदितकुमार जी ने कहा- 'तेरापंथ धर्मसंघ एक प्राणवान, अनुशासित एवं सुसंगठित धर्मसंघ है। यह स्वस्थ भी इसलिए है कि यहां साधु-साध्वी मर्यादा पालन में पूर्ण रूप से सजग हैं। एक आचार, एक विचार, एक प्ररूपणा। एक आचार्य के निर्देशन में चलने वाला यह हमारा धर्मसंघ सबके लिए प्रेरणा स्रोत इसीलिए बना हुआ है कि इसके माध्यम से सबको आचारनिष्ठा, श्रद्धा एवं समर्पण की शिक्षा मिल रही है। युगप्रधान आचार्यश्री महाश्रमण जी के नेतृत्व में तेरापंथ धर्मसंघ कितनी अच्छी प्रगति कर रहा है।' सन् 2024 में आचार्य प्रवर का चातुर्मास सूरत में हो रहा है।

इस संदर्भ में मुनिश्री ने श्रावक समाज को विशेष बलवती प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में शासनश्री साध्वी चंदनबाला जी की ओर से साध्वी राजश्री जी, शासनश्री साध्वी मधुबाला जी की ओर से साध्वी मंजुलयशा जी, साध्वी त्रिशला कुमारी जी की ओर से साध्वी कल्पयशा जी तथा साध्वी हिमश्री जी और साध्वी सम्यकप्रभा जी ने तेरापंथ की मर्यादा व्यवस्था आदि के संदर्भ में प्रेरक विचार प्रस्तुत किए। मुनि ज्योतिर्मय जी ने कविता प्रस्तुत की। मुनि अनंत कुमार जी एवं मुनि पारस कुमार जी के प्रासंगिक वक्तव्य हुए।

कार्यक्रम का प्रारंभ मर्यादा गीत से हुआ। तेरापंथ कन्या मंडल ने महाश्रमण अष्टकम् प्रस्तुत किया। आचार्यश्री महाश्रमण प्रवास व्यवस्था समिति, सूरत के अध्यक्ष संजय सुराणा, तेरापंथी सभा सूरत, उधना के पदाधिकारीगण ने अपने भाव व्यक्त किए।

सूरत श्रावक समाज ने एक सुंदर समूह गीत प्रस्तुत किया। सभी साधु-सध्वियों ने कार्यक्रम के अंत में खड़े होकर सामूहिक रूप से लेख पत्र का समुच्चारण किया। चीफ ट्रस्टी बाबूलाल भोगर ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया। संघगान के साथ कार्यक्रम का समापन हुआ। इस अवसर पर श्रावक-श्राविका बहुत बड़ी संख्या में उपस्थित थे। कार्यक्रम का संचालन मुनि रम्यकुमार जी ने किया।

ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

संक्षिप्त खबर

रक्तदान शिविर का आयोजन

अमराईवाड़ी-ओढव। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद अमराईवाड़ी-ओढव द्वारा रक्तदान शिविर का आयोजन किया गया। सामूहिक नमस्कार महामंत्र से कार्यक्रम की शुरुआत की गई। तेयुप अध्यक्ष हितेश चपलोत ने सभी आगन्तुकों का स्वागत किया। कार्यक्रम की संपूर्ण जानकारी एमबीडीडी संयोजक मुकेश सिंघवी ने दी। रक्तदान शिविर में तेरापंथी सभा, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ महिला मंडल, तेरापंथ किशोर मंडल के सदस्यों का सराहनीय सहयोग एवं सहभागिता रही। इस शिविर में 70 यूनिट रक्त एकत्रित हुआ। शिविर का सफलतापूर्वक आयोजन करने में विपुल मांडोत, ललित वागरेचा, विनोद दक, ज्योति तातेड़ एवं परिष्कार टीम का विशेष योगदान रहा। प्रथमा ब्लड बैंक तथा उनके स्टॉफ मेम्बरों का विशेष सहयोग मिला। आभार ज्ञापन तेयुप मंत्री सुनील चिप्पड़ ने किया।

अस्थि चिकित्सा शिविर

पूर्वांचल कोलकाता। डॉ. धीरज मरोठी के निर्देशन में अस्थि चिकित्सा शिविर का आयोजन एटीडीसी पूर्वांचल कोलकाता में किया गया। कुल 13 व्यक्तियों ने इस शिविर में चिकित्सा का लाभ लिया। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता ने डॉ. धीरज मरोठी को उनके द्वारा प्रदत निरंतर सहयोग के लिए विशेष साधुवाद प्रकट किया। वर्ष 2023-24 का यह छठा अस्थि चिकित्सा शिविर था। तेयुप पूर्वांचल कोलकाता से उपाध्यक्ष द्वितीय नीरज बैंगानी एवं संयोजक रोहित धाड़ेवा का इस शिविर में विशेष सहयोग रहा।

रक्तदान शिविर का सफल आयोजन

गुवाहाटी। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद गुवाहाटी द्वारा रक्तदान शिविर का सफल आयोजन किया गया। शिविर का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। तेयुप अध्यक्ष जयंत सुराणा ने रक्तदान का महत्व बताते हुए शिविर में उपस्थित सभी सदस्यों का स्वागत-अभिनंदन किया। शिविर में 12 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। शिविर में तेयुप अध्यक्ष, उपाध्यक्ष सुमनेश कोठारी, मंत्री संदीप कुमार भादानी, सहमंत्री अमित मालू एवं तेयुप सदस्य मोहित बोथरा की सक्रिय भूमिका रही।

अणुव्रत आन्दोलन के 75वां अमृत महोत्सव

विल्लुपुरम, चेन्नई। श्री सुसवाणी माता ट्रस्ट भवन में उपस्थित धर्म परिषद् को साध्वी डॉ. गवेषणाश्री जी ने सकारात्मक विचार सम्पन्न बनने की प्रबल प्रेरणा दी। साध्वीश्री ने कहा कि व्यक्ति को अपने दिल और दिमाग को खुला रखना चाहिए। अहिंसक जीवन शैली को अपनाते हुए अपनी सुख-सुविधाओं में अतिभोगी नहीं बने। अणुव्रत आन्दोलन के 75वें अमृत महोत्सव वर्ष को परिलक्षित करते हुए साध्वीश्री ने कहा कि गणाधिपति पूज्य गुरुदेव तुलसी ने हमें अणुव्रत का अवदान दिया। हम अणुव्रत को अपनाते हुए हिंसा के अल्पीकरण के साथ पर्यावरण संरक्षण में सहभागी बनें। नमस्कार महामंत्र और अणुव्रत संगान से प्रारंभ कार्यक्रम में कथानक के माध्यम से साध्वीश्री ने विशेष पाथेय प्रदान किया कि ईष्यावान व्यक्ति दूसरों से पहले स्वयं अपना ही अहित कर लेता है, अतः माइंड को ब्रॉड रखें। सबके साथ हिल-मिल कर रहें। साध्वी मेरुप्रभा जी, साध्वी मंयकप्रभा जी, साध्वी दक्षप्रभा जी ने भी परिषद् को सम्बोधित किया। श्री जैन श्वेताम्बर तेरापंथ ट्रस्ट, माधावरम् के प्रबंध न्यासी घीसूलाल बोहरा, तेयुप अध्यक्ष दिलीप गेलड़ा, सहमंत्री नवीन बोहरा, अणुव्रत समिति मंत्री स्वरूपचन्द दाँती ने अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी। विल्लुपुरम से सुशील सुराणा ने अतिथियों का स्वागत करते हुए आभार व्यक्त किया।

संस्कृति का संरक्षण-संस्कारों का संवर्द्धन
जैन विधि-अमूल्य निधि

नूतन प्रतिष्ठान

■ **राजाजीनगर।** राजाजीनगर। प्रदीप पंकज सुराणा के मामुलपेठ स्थित नूतन प्रतिष्ठान 'पद्मावती क्रिएशन' का जैन संस्कार विधि से शुभारंभ करवाया गया। संस्कारक राजेश देरासरिया एवं रनीत कोठारी ने विभिन्न मंगल मंत्रोचार के द्वारा मांगलिक संस्कार संपन्न करवाया। उपस्थित सुराणा परिवार के सदस्यों ने आध्यात्मिक भेंट स्वरूप विभिन्न संकल्प एवं त्याग ग्रहण किये। तेयुप अध्यक्ष कमलेश गन्ना ने सुराणा परिवार के प्रति शुभकामनाएं सम्प्रेषित करते हुए सभी मांगलिक कार्यक्रम जैन विधि से करने हेतु निवेदन किया। पंकज सुराणा ने परिषद परिवार के प्रति आभार व्यक्त किया। इस अवसर पर तेयुप बैंगलोर निवर्तमान अध्यक्ष प्रदीप चोपड़ा, उपाध्यक्ष आलोक कुंडलिया एवं सुराणा परिवारजनों की उपस्थिति रही।

ज्ञानशाला शिविर

ज्ञानशाला के ज्ञानार्थियों का 2023 का वार्षिक परिणाम हुआ घोषित

सिकंदराबाद।

श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ सभा सिकंदराबाद में 23 ज्ञानशालाओं का व्यवस्थित संचालन हो रहा है। ज्ञानशाला में राजेन्द्र बोथरा द्वारा दी गई जानकारी अनुसार हैदराबाद में ज्ञानशाला पाठ्यक्रम के शिशु संस्कार भाग 1 से लेकर भाग 5 तक की परीक्षा नगर त्रय में 6 केन्द्रो पर आयोजित की गई। जिसमें सभी ज्ञानशालाओं के लगभग 250 बच्चों ने मौखिक परीक्षा दी। क्षेत्रीय संयोजक संगीता गोलछा व परीक्षा व्यवस्थापक पुष्पा बरडिया ने बताया कि इस परीक्षा में सम्पूर्ण 23 ज्ञानशालाओं में से 'हैदराबाद स्तर' पर सर्वोच्च स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थियों की सूची इस प्रकार है। भाग 1 में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले ज्ञानार्थी विहान बोथरा(कारखाना), निशिका जैन (सुचित्रा), अन्वी दुगड़ और मनन भंडारी (चैतन्यपुरी) रहे। द्वितीय स्थान पर अंशिका हीरावत और रिद्धि आंचलिया नव गठित काचीगुड़ा ज्ञानशाला के ज्ञानार्थी रहे। तृतीय स्थान अदिति संचेती तथा रतीश संचेती (काचीगुड़ा) तथा रेयांश बोथरा (कारखाना) ने प्राप्त किया। भाग 2 में प्रथम स्थान निमेष बरडिया, कृति दुगड़, मिहान चोपड़ा, मिशा सिंघी, पलक मंडोत (डी वी कॉलोनी) रीत पिंचा (शिवरमपल्ली), तृषा सिंघी (चैतन्यपुरी) ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर काव्य श्रीमाल (बोयनपल्ली), विहान सुराणा (कवाड़ीगुड़ा) रहे। तृतीय स्थान पर मुस्कान सिंघी (चैतन्यपुरी) ने प्राप्त किया।

भाग 3 में प्रथम स्थान हर्षित बोथरा (कवाड़ीगुड़ा) ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान काशवी दुगड़ (डीवी कॉलोनी) प्रांजल भंडारी (हाइटेक सिटी) रोहन खटेड़ (कवाड़ीगुड़ा) ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान पर करूण पोरवार (मारेडपल्ली) रहे। भाग 4 में प्रथम स्थान रीत चौरडिया, निहिरा बरडिया, धृति दुग्गड, अरहम भंसाली (डी वी कॉलोनी), वीर लाहोटी (अत्तापुर)ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान पर विहा भंसाली (कवाड़ी गुड़ा) रही। तृतीय स्थान पर पूर्वी सिंघी तथा उत्सव भंसाली (कवाड़ीगुड़ा) ने प्राप्त किया।

भाग 5 में प्रथम स्थान प्रियांशी श्रीमाल (बोयनपल्ली) ने प्राप्त किया। द्वितीय स्थान अनाया बोथरा (अतापुर) तथा जानवी बैद (कारखाना) ने प्राप्त किया। तृतीय स्थान ध्वनि नाहटा (कारखाना) तथा रिया लुणावत (हिमायतनगर) ने प्राप्त किया। ज्ञानशाला का नव शैक्षणिक वर्ष प्रारंभ हो चुका है।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

6 केन्द्रो पर आयोजित की गई। जिसमें सभी ज्ञानशालाओं के लगभग 250 बच्चों ने मौखिक परीक्षा दी।

मेधावी विद्यार्थियों के लिए सम्मान समारोह का आयोजन

भीलवाड़ा। तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, भीलवाड़ा द्वारा मेधावी विद्यार्थी सम्मान समारोह का आयोजन किया गया। सचिव सपना कोठारी ने बताया कि इस कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य तेरापंथ समाज की उन प्रतिभाओं का सम्मान करना है, जिन्होंने देश भर में अपना नाम तो रोशन किया है साथ ही परिवार और समाज का नाम भी रोशन किया है। अध्यक्ष प्रशांत सिंघवी ने सभी का स्वागत करते हुए सभी बच्चों को आगे बढ़ने की प्रेरणा दी और सभी को सर्टिफिकेट व मेडल के साथ सम्मानित किया। तेरापंथी सभा अध्यक्ष जसराज चोरड़िया ने भी अपने विचार व्यक्त किए। इस कार्यक्रम में लगभग 40 बच्चों का सम्मान किया गया। ग्रीन वैली स्कूल के डायरेक्टर भाटिया जी ने भी बच्चों को प्रोत्साहित किया। कार्यक्रम में अणुव्रत समिति के अध्यक्ष अभिषेक कोठारी, तेरापंथ महिला मंडल मंत्री अमिता बाबेल, तेरापंथ युवक परिषद के अध्यक्ष सुरेश चोरड़िया, पीयूष रांका सहित अनेक पदाधिकारीगण एवं सदस्य मौजूद थे।

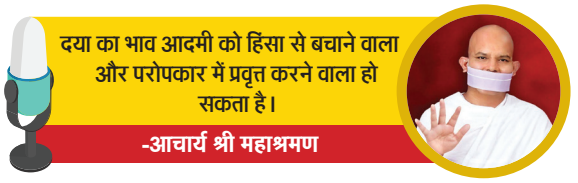

संबोधि

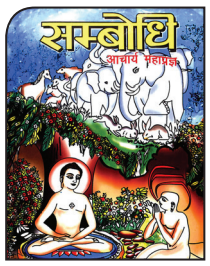

बंध-मोक्षवाद ज्ञेय-हेय-उपादेय

-आचार्य महाप्रज्ञ

बारह भावनाएँ

भगवान् प्राह

८६- आवृतं जायते चित्तं, ज्ञानावरणयोगतः ।
हतं स्यादन्तरायेण मूढं मोहेन जायते ॥

भगवान् ने कहा- चित्त ज्ञानावरणीय कर्म से आवृत होता है, अंतराय कर्म से प्रतिहत होता है और मोह कर्म से मूढ बनता है ।

भगवान् महावीर की दृष्टि में ज्ञानावरणीय, अंतराय और मोहनीय- ये तीन कर्म बाधक हैं। ज्ञान पर जो आवरण है, वह ज्ञानावरणीय है, आत्मा को जानने में यह बाधा डालता है। जब यह हट जाता है तब ज्ञान का क्षेत्र व्यापक बन जाता है। आत्म-विकास में विघ्न डालने वाला कर्म अंतराय है। वह आत्म-शक्ति के अजस्र स्रोत को रोकता है। मनुष्य यथार्थ को जानता हुआ भी उसमें उद्योग नहीं करता। यथार्थ के प्रति श्रद्धाशील न होना और न उसको स्वीकार करना - यह मोहनीय कर्म की देन है। मोहोदय से मनुष्य भौतिक आकर्षणों में फंसा रहता है। सत्य के प्रति न उसकी अभिरुचि होती है, न वह सत्य का आचरण ही करता है। किन्तु उल्टा इसे अपनी शांति में बाधक मानता है। यह मूढ़ता मोहजन्य है ।

८७- स्वसम्मत्याऽपि विज्ञाय, धर्मसारं निशम्य वा।
मतिमान् मानवो नूनं, प्रत्याचक्षीत पापकम्॥

बुद्धिमान् मनुष्य धर्म के सार को अपनी सहज बुद्धि से जानकर या सुनकर पाप का प्रत्याख्यान करे।

बुद्ध ने कहा- भिक्षुओ! मैं आदरणीय, श्रद्धेय और सम्मानीय हूं, इसलिए मेरी वाणी को स्वीकार मत करो, किन्तु अपनी मेधा - बुद्धि से परीक्षण करके स्वीकार करो- '**परीक्ष्य भिक्षवो ग्राह्यं मद्वचो न तु गौरवात्।**' महावीर भी यही कहते हैं - अपनी बुद्धि से परखो - '**मइमं पास।**' और भी आत्मद्रष्टा ऋषियों का यही स्वर है। मुहम्मद ने कहा है- 'सब जगह मुझे ही प्रमाण मत मानो।' किन्तु व्यवहार में यह कम ही होता है। मनुष्य की बुद्धि कुछ परिपक्व होती है उससे पूर्व ही वह धर्म को पकड़ लेता है। जन्म के साथ धर्म का जन्म होना देखा जाता है। कहते हैं - दुनियां में हजारों मत-मतान्तर हैं। प्रायः व्यक्ति अपनी सीमा में खड़े मिलते हैं। हिन्दू, बौद्ध, जैन, ईसाई, मुस्लिम, सिक्ख आदि का चोला जन्म के साथ धारण हो जाता है।

मनुष्य में धर्म की भूख–जिज्ञासा पैदा ही नहीं होती। उससे पूर्व धर्म का भोजन उसे प्राप्त हो जाता है। सत्य का मार्ग उद्घाटित नहीं होता। सत्य की प्यास पैदा होना कठिन है और प्यास पैदा हो जाए तो फिर पानी मिलना सरल नहीं है। जीसस ने कहा है- धन्य हैं वे जिन्हें धर्म की भूख है क्योंकि उनकी भूख तृप्त हो जाएगी। 'सबसे पहले यह अपेक्षित है कि व्यक्ति में धर्म की भूख जागृत हो। पाप कर्म से निवृत्त होना कठिन नहीं है जितना कि धर्म की भूख का जागरण होना है। अर्जुनमाली, अंगुलिमान, वाल्मिकी आदि प्रसिद्ध हैं जिनको धर्म की प्यास पैदा होते ही मार्ग मिला और उनके पाप छूटते चले गए।

८८- उपायान् संविजानीयाद, आयुः क्षेमस्य चात्मनः।
क्षिप्रमेव यतिस्तेषां शिक्षां शिक्षेत पण्डितः॥

संयमशील पण्डित अपने जीवन के कल्याणकर उपायों को जाने और उनका शीघ्र अभ्यास करे।

८९- यथा कूर्मः स्वकाङ्गानि, स्वके देहे समाहरेत्।
एवं पापानि मेधावी, अध्यात्मेन समाहरेत्।।

जिस प्रकार कछुआ अपने अंगों को अपने शरीर में समेट लेता है, उसी प्रकार मेधावी पुरुष अध्यात्म के द्वारा अपने पापों को समेट ले।

कछुए की उपमा साधक के लिए गीता, बुद्ध वचन, महावीर वाणी आदि में सर्वत्र प्रयुक्त हुई है। कछुवा भयभीत स्थान में तत्काल अपने अंगों को समेट कर सुरक्षित हो जाता है।
साधक के लिए कछुए की वृत्ति आवश्यक है। वह अपनी प्रवृत्तियों को सतत समेटे रखे। बाहर भय ही भय है। जहां भी अनुपयुक्त–प्रमत्त हुआ कि बंधा। मुक्ति के लिए अप्रमत्तता आवश्यक है।

(क्रमशः)

श्रमण महावीर

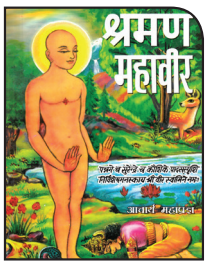

जीवनवृत्त : कुछ चित्र, कुछ रेखाएँ

(पिछला शेष)

सिद्धार्थ ने नंदिवर्द्धन और सुपार्श्व से परामर्श किया और वे समाधि-मृत्यु की तैयारी में लग गए। भोजन की मात्रा कम कर दी। अल्पाहार और उपवास के द्वारा शरीर को साथ लिया। अनासक्ति, वैराग्य और आत्मदर्शन के द्वारा उनका मन समाहित हो गया। उन्होंने मृत्यु का इतने शांतभाव से वरण किया कि मृत्यु को स्वयं पता नहीं चला कि वह कब आ गई? [१]

माता-पिता वर्द्धमान से बहुत प्रेम करते थे। माता-पिता के प्रति उनके मन में बहुत प्रेम था। अट्ठाईस वर्ष तक वे निरन्तर माता-पिता की छत्रछाया में रहे। अब कुमार के मन में बार-बार यह प्रश्न उभरने लगा–क्या वह छाया सचमुच बादल की छाया थी?

माता-पिता के स्वर्गवास से कुमार का स्नेहिल मानस व्यथित हो उठा। जीवन की नश्वरता का सिद्धान्त व्यवहार में उतर आया। संयोग का अन्त वियोग में होता है–यह आखों के सामने नाचने लगा। वे स्नेह के उस चरम बिन्दु पर पहुंच गए जहां अनुराग विराग के सिंहासन पर विराजमान होता है।

चुल्लपिता के पास

सुपार्श्व की आशा पर तुषारापात जैसा हो गया। वे वर्द्धमान के चक्रवर्ती होने का स्वप्न संजोए बैठे थे। प्रसिद्ध ज्योतिषियों ने उन्हें इसका विश्वास दिलाया था। उनका आत्मविश्वास भी यही कह रहा था। उन्होंने अपने विश्वास को दूर-दूर तक प्रचारित किया था। इस प्रचार के आधार पर श्रेणिक, प्रद्योत आदि अनेक राजकुमार वर्द्धमान की सेवा में उपस्थित होते थे। उनके पराक्रम, पुरुषार्थ और चरित्र उनके चक्रवर्ती होने का साक्ष्य दे रहे थे।

वर्द्धमान गृहवास को छोड़कर श्रमण बनने को उत्सुक हैं–इस सूचना से सुपार्श्व के सपनों का महल ढह गया। वे भाई के वियोग की व्यथा का परिधान अभी उतार नहीं पाए थे कि वर्द्धमान के अभिनिष्क्रमण की चर्चा ने उन्हें व्यथा का नया परिधान पहना दिया।

वर्द्धमान ने देखा, सुपार्श्व पूर्व-सूचना के बिना उनके कक्ष में आ रहे हैं। वे चुल्लपिता के आकस्मिक आगमन से विस्मय में पड़ गए। वे उठकर उनके सामने गए। प्रणाम कर बोले, 'चुल्लपिता! आपके आगमन से मैं कृतार्थ हूं। मैं आपकी कृपा के लिए आभारी हूं। पर आपने यहां आने का कष्ट क्यों किया? मुझे आप अपने कक्ष में ही बुला लेते।'

सुपार्श्व ने मुस्कुराकर कहा, 'कुमार! मैं यहां आऊं या तुम वहां आओ, इसमें कोई अन्तर नहीं पड़ता। जो अन्तर पड़ रहा है उसे मिटाने की बात करो।'

'मैं नहीं जानता, आपके और मेरे बीच में कोई अन्तर है, चुल्लपिता!'

'बेटे! तुम सच कहते हो। 'भाई के जीवनकाल में मेरे और तुम्हारे बीच में कोई अन्तर नहीं था। पर...'

'वह अब कैसे आएगा? अब तो आप ही मेरे पिता हैं'

भाई की स्मृति और कुमार की मृदु उक्ति से सुपार्श्व भावविह्वल हो गए। उनकी आंखों से आसुओं की धार वह चली। वे सिसक-सिसककर रोने लगे। वे कुछ कहना चाहते थे पर वाणी उनका साथ नहीं दे रही थी। कुमार स्तब्धजड़ित जैसे एकटक उनकी ओर निहारते रहे। सुपार्श्व कुछ आश्वस्त हुए। भावावेश को रोककर कक्ष के एक आसन पर बैठ गए। कुछ क्षणों तक वातावरण में नीरवता छा गई।

'वर्द्धमान! भाई और भाभी अब संसार में नहीं हैं–इसका सबको दुःख है। पर उस स्थिति पर हमारा वश नहीं है। कुमार! उस अवश स्थिति का लाभ उठाकर तुम घर से निकल जाना चाहते हो, यह सहन नहीं हो सकता।'

'चुल्लपिता! मैं घर से निकल जाना कहां चाहता हूं। मैं अपने घर से निकला हुआ हूं, फिर से घर में चला जाना चाहता हूं।'

'कुमार! ऐसा मत कहो। तुम अपने घर में बैठे हो और उस घर में बैठे हो जिसमें जन्मे, पले-पुसे और बड़े हुए।'

'चुल्लपिता! क्या मेरा अस्तित्व अट्ठाईस वर्ष से ही है? क्या इससे पहले मैं नहीं था? यदि था तो यह घर मेरा अपना कैसे हो सकता है? मेरा घर मेरी चेतना है जो कभी मुझसे अलग नहीं होती। मैं अब उसी में समा जाना चाहता हूं।'

(क्रमशः)

धर्म है उत्कृष्ट मंगल

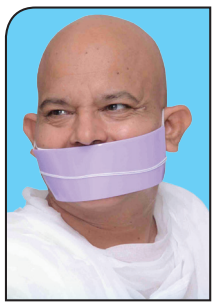

संवरो मोक्षकारणम्

-आचार्य श्री महाश्रमण

सम्यक्त्व संवर

यह मिथ्यात्व आश्रव का प्रतिपक्षी है। सम्यक् श्रद्धान इसका स्वरूप है। यह प्रथम चार गुणस्थानों में निष्पन्न नहीं होता। पांचवें गुणस्थान में यह निष्पन्न हो जाता है जो कि चौदहवें गुणस्थान तक रहता है। पूर्व गुणस्थान में जो संवर निष्पन्न हो गया, वह उत्तरवर्ती गुणस्थानों में भी कायम रहता है। दूसरे व चौथे गुणस्थान में मिथ्यात्व आश्रव नहीं है परन्तु वहां सम्यक्त्व संवर भी परम्परा सम्मत नहीं है। अन्य चार आश्रवों व चार संवरों में एक समान सिद्धांत कायम रहता है जहां आश्रव नहीं, वहां उस आश्रव का प्रतिपक्षी संवर निष्पन्न हो जाता है, जैसे पांचवें गुणस्थान में आंशिक अव्रत आश्रव रुकता है, फलतः आंशिक व्रत संवर निष्पन्न हो जाता है। छट्ठे गुणस्थान में पूर्णतया अव्रत आश्रव रुकता है, परिणाम-स्वरूप पूर्ण व्रत संवर निष्पन्न हो जाता है। सातवें गुणस्थान में प्रमाद आश्रव रुकता है, अप्रमाद संवर निष्पन्न हो जाता है। ग्यारहवें गुणस्थान से कषाय आश्रव समाप्त हो जाता है, वहां अकषाय संवर निष्पन्न हो जाता है। चौदहवें गुणस्थान में योगआश्रव नहीं रहता, वहां अयोग संवर निष्पन्न हो जाता है। केवल मिथ्यात्व आश्रव और सम्यक्त्व संवर में ही पारस्परिक यह स्थिति नहीं है। दूसरे व चौथे गुणस्थान में मिथ्यात्व आश्रव भी नहीं है और सम्यक्त्व संवर भी नहीं है। कुछ भी हो, समझने में जटिलता जरूर प्रतीत हो रही है। सम्यक्त्व संवर त्याग-प्रत्याख्यान जन्य माना गया है।

व्रत संवर

यह सावद्य योग का प्रत्याख्यान व विरमण से उत्पन्म होने वाला है। इससे चारित्र की निष्पत्ति होती है। छठे से दसवें गुणस्थान तक क्षायोपशमिक चारित्र और ग्यारहवें गुणस्थान में औपशमिक चारित्र और बारहवें से चौदहवें गुणस्थान तक क्षायिक चारित्र होता है।

अप्रमाद संवर

आध्यात्मिक लीनता की स्थिति में यह संवर निष्पन्न होता है। यह स्थिति सातवें गुणस्थान में निष्पन्न होती है। तीर्थंकर संयम-ग्रहण के समय चतुर्थ गुणस्थान से सीधे सप्तम गुणस्थान को प्राप्त होते हैं। यह अप्रमाद की स्थिति बार-बार आती-जाती रह सकती है।

अकषाय संवर

सर्वथा कषायमुक्त स्थिति (मोह की अनुदयावस्था) में यह संवर निष्पन्न होता है। यह ग्यारहवें गुणस्थान से प्रारम्भ होता है। ग्यारहवें गुणस्थान वाला अकषाय संवर निश्चितरूपेण पुनः कषाय आश्रव के रूप में परिणत होता है। साधक पतन को प्राप्त हो नीचे की भूमिका में आ जाता है।

अयोग संवर

यह एकमात्र चौदहवें गुणस्थान में निष्पन्न होने वाली स्थिति है। वहां मन, वचन और काय की प्रवृत्ति सर्वथा समाप्त हो जाती है। यह अत्यल्प काल तक रहने वाली स्थिति है। पांच हस्वाक्षर के उच्चारण काल जितनी इसकी अवधि होती है।

अप्रमाद, अकषाय और अयोग संवर प्रत्याख्यान जन्य नहीं हैं, वे कर्मविलय से सहज निष्पन्न होने वाले संवर हैं।

जैसे कुण्ड का नाला बन्द कर देने से पानी का कुण्ड में प्रवेश नहीं हो सकता, भवन का द्वार बन्द कर देने से मनुष्य आदि का उनमें प्रवेश अवरुद्ध हो जाता है, नौका का छिद्र रोक देने से उसमें से जल का प्रवेश भीतर नहीं हो पाता है। इसी प्रकार जीव के आश्रवद्वार रुक जाने से कर्म का आगमन बन्द हो जाता है। इस कर्म-आगमन-द्वार के बन्द होने को ही संवर कहा जाता है।

प्राणातिपात विरमण संवर आदि पन्द्रह संवर व्रतसंवर के भेद हैं। इन पन्द्रह भेदों में प्रत्याख्यान (त्याग) की अपेक्षा रहती है। प्राणातिपात आदि पन्द्रह आश्रव योग आश्रव हैं। इनके अशुभ योग आश्रवों के प्रत्याख्यान से व्रत संवर निष्पन्न होता है। मन, वचन, काय के शुभ योग अवशेष रहते हैं। उनका सर्वथा निरोध होने पर अयोग संवर निष्पन्न होता है। यहां प्रश्न यह उठता है– प्राणातिपात आदि पन्द्रह आश्रव योग आश्रव के भेद हैं तो फिर प्राणातिपात विरमण आदि पन्द्रह संवर अयोग संवर के भेद न होकर व्रत संवर के भेद क्यों?

इसका उत्तर यह है- अव्रत आश्रव का आधार प्राणातिपात आदि पाप हैं। इनका त्याग न होना ही अव्रत आश्रव है। पन्द्रह आश्रव प्राणातिपात आदि पापों में समाविष्ट हैं।

पन्द्रह आश्रव प्रवृत्तिरूप है, अतः वे योग आश्रव के अन्तर्गत हैं। इन पन्द्रह आश्रवों का प्रत्याख्यान करने से अत्याग भाव रूप अव्रत का निरोध होता है अतः प्राणातिपात विरमण आदि पन्द्रह संवर व्रत संवर के भेद निष्पन्न होते हैं।

परन्तु प्रश्न अभी भी समाधान मांगता है– प्राणातिपात आदि आश्रव योग आश्रव हैं तो उनके निरोध से अयोग संवर भी निष्पन्न क्यों नहीं होना चाहिए।

अशुभ योग निरुद्ध हो जाने से निवृत्ति हो जाएगी। प्रवृत्ति बन्द हो जाएगी, ऐसा नहीं माना जा सकता। योगों की अशुभता दूर होती है, एक सीमा तक रागात्मक व द्वेषात्मक परिणाम रुकते हैं। उससे अव्रत आश्रव रुकता है। अशुभ योग को रोकने से योग निरोध नहीं होता, रागद्वेषात्मक परिणामों का सीमित निरोध होता है। अशुभ योग शुभ योग में परिवर्तित हो जाता है। योग निरोध कहां हुआ? योग निरोध या अयोग तब होता है जब अशुभयोग निवृत्ति के बाद शुभयोग की भी निवृत्ति हो। यह स्थिति पूर्णरूपेण चौदहवें गुणस्थान में निष्पन्न होती है। साधु उपवास, बेला आदि तपस्या करता है तो उसके निरवद्य योग के निरोध से सहचारी संवर भी होता है। इसे आंशिक अयोग संवर कहने में आपत्ति नहीं होनी चाहिए।

श्रावक कर्मक्षय के लिए उपवास आदि तपस्या करता है तो सावद्य योग का निरोध होने से उसके सहचारी व्रत संवर होता है।

श्रावक के सारे पौद्गलिक भोग मन-वचन-काय के सावद्य व्यापार हैं। उनका प्रत्याख्यान करने से व्रत संवर अंशतः निष्पन्न होता है और सहचारी तप भी होता है।

साधु का चलना, फिरना आदि व्यापार, यदि वह उपयोग सहित किया जाए तो, निरवद्य योग है। उनका निरोध करने के अनुपात से संवर होता है और साथ-साथ तपस्या भी होती है।

संवर का विषय बहुत गम्भीर और अति उपयोगी है। गहन चिन्तन-मनन और अनुप्रेक्षा से नई दृष्टि अनावृत हो सकती है।

(६) निर्जरा : एक विश्लेषण

जैन दर्शन में षड्द्रव्य और नवतत्त्व– पदार्थ के दो वर्गीकरण उपलब्ध हैं। षड्द्रव्य का सिद्धांत विश्व व्यवस्था को व्याख्यायित करता है और नवतत्त्व अध्यात्म के साधक-बाधक तत्त्वों का निरूपण करता है। षड्द्रव्य के केन्द्र में है विशव व्यवस्था और नवतत्त्व के केन्द्र में है अध्यात्म।

नवतत्त्व में सातवां तत्त्व है- निर्जरा। इसका स्वरूप है तपस्या से होने वाला आत्मा का शोधन। निर्जरा और मोक्ष दोनों में कर्मक्षय होता है। आंशिक कर्मक्षय निर्जरा और सम्पूर्ण कर्मक्षय मोक्ष कहलाता है।

निर्जरा के दो प्रकार हैं- सकाम और अकाम। आत्मशुद्धि की भावना से की जाने वाली निर्जरा सकाम और उसके बिना होने वाली निर्जरा अकाम कहलाती है। दोनों ही प्रकार की निर्जरा सम्यग् दृष्टि और मिथ्यादृष्टि दोनों प्रकार के जीवों के हो सकती है।

आचार्य उमास्वाति ने निर्जरा के दो भेद किये हैं-अबुद्धिपूर्वा निर्जरा और कुशलमूला निर्जरा। कर्मों के फल-विपाक से सहजतया जो कर्मों की निर्जरा होती है वह अबुद्धिपूर्वा निर्जरा है। इसमें कर्म-निर्जरण का इरादतन प्रयास नहीं होता। इस प्रकार की निर्जरा को अकुशलानुबन्धा भी कहा जाता है। आत्मशुद्धि के उद्देश्य से की जाने वाली तपस्या और परीषहजय से होने वाली निर्जरा कुशलमूला कहलाती है।

कुशलमूला निर्जरा भी दो प्रकार की होती है- शुभानुबन्धा और निरनुबन्धा। जिस निर्जरा का फल स्वर्ग आदि सुगति हो, वह शुभानु- बन्धा निर्जरा है। जो साक्षात् मोक्ष का कारण बने वह निरनुबन्धा निर्जरा है। अकामनिर्जरा की अबुद्धिपूर्वा और सकामनिर्जरा की कुशलमूला के साथ तुलना की जा सकती है।

निर्जरा वास्तव में एकाकार है, एक ही प्रकार की है। विभिन्न दृष्टिकोणों से उसके अनेक वर्गीकरण भी किए जा सकते हैं। निर्जरा ज्ञानावरण आदि आठ कर्मों की होती है इसलिए वह आठ प्रकार की होती है।

(क्रमशः)

अणुव्रत की साधना करने वाला व्यक्ति अहिंसा और संयम को आंशिक रूप से साध सकता है। उसकी वह साधना पर्यावरण की दृष्टि से भी उपयोगी बन जाती है।
-आचार्य श्री महाश्रमण

महिला मंडल के विविध आयोजन

मदुरै

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार मदुरै तेरापंथ महिला मंडल के अंतर्गत तेरापंथ भवन में श्री उत्सव का आयोजन किया गया। तेरापंथ महिला मंडल की बहनों ने प्रेरणा गीत से कार्यक्रम का प्रारंभ किया। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अशोक जीरावला ने महिलाओं को हर क्षेत्र में आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहित किया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष लता कोठारी ने सभी स्टॉल मेंबर्स का स्वागत किया। मुख्य अतिथि ने सभी का उत्साह बढ़ाते हुए कहा कि नारी अपनी शक्ति को पहचान कर कोई भी उपलब्धि पा सकती है और इसी तरह आत्मनिर्भर होकर आगे बढ़ सकती है। तेरापंथ युवक परिषद अध्यक्ष अमृत चोपड़ा ने गीतिका का संगान किया। श्री उत्सव में लगभग 600 से अधिक भाई बहिनों की उपस्थित रही। तेरापंथी सभा, तेरापंथ महिला मण्डल, तेरापंथ युवक परिषद, तेरापंथ कन्या मंडल, ज्ञानशाला सभी का पूर्ण सहयोग रहा। कार्यक्रम का कुशल संचालन कोषाध्यक्ष नैना पारख ने किया।

वाशी, नवी मुंबई

सिडको कन्वेशन हॉल में श्री जैन श्वेतांबर तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई का 43वां वार्षिक अधिवेशन एवं मुंबई के 46 नवगठित तेरापंथ महिला मंडलों के शपथ ग्रहण कार्यक्रम का समायोजन हुआ। अभातेममं की संरक्षिका प्रकाश देवी तातेड़ ने नमस्कार महामंत्र के साथ कार्यक्रम की शुरुआत की। तेरापंथ महिला मंडल की कर्मठ एवं संघ सेवा में समर्पित श्राविका सरला कोठारी के गत दिनों आकस्मिक निधन पर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। इस अवसर पर साध्वी प्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने मंगल पाथेय प्रदान करवाते हुए फरमाया कि परिसीमन के साथ नवगठित मंडलों को अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशन में एकरूपता के साथ कार्य करते हुए संगठन को सशक्तिकरण प्रदान करना है। विकास के कार्यों को आगे बढाना है एवं बिना किसी अहं भाव के सभी को साथ लेकर आगे बढ़ना है। तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई की कार्यसमिति बहिनों ने सुमधुर गीतिका के साथ मंगलाचरण किया। अभातेममं की राष्ट्रीय अध्यक्षा सरिता डागा एवं महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने तेरापंथ महिला मंडल, मुंबई के सफलतम कार्यकाल की सराहना करते हुए बधाई के भाव व्यक्त किए। अध्यक्षीय एवं स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत करते हुए मुंबई महिला मंडल अध्यक्षा विमला कोठारी ने स्वागत-अभिनंदन किया व गत आठ महीनों के कार्यकाल के स्वर्णिम पलों को साझा करते हुए अपने अनुभव बताए। उन्होंने कहा कि जिस बगिया को सरसाने में बीस पूर्वाध्यक्षों के साथ मुम्बई महिला मंडल की हर बहिन ने अपने श्रम सिंचन से सींचा व मंडल को एक शिखर स्वरूप प्रदान किया, उसका उल्लेख शायद शब्दों में बयां नहीं हो सकता। उन्होंने सभी नवगठित 46 शाखा मंडलों को विकास के पथ पर आगे बढ़ने की शुभकामना प्रेषित की।

राष्ट्रीय पूर्वाध्यक्ष कुमुद कच्छारा ने कहा कि पूर्व अध्यक्षों ने मुंबई महिला मंडल को जो मजबूती प्रदान की है और जो श्रम की स्याही से स्वास्तिक उकेरे हैं, उनका उपकार कभी न भुलाएं। पद पर आने के बाद पद का अभिमान नहीं करें। समय-समय पर पूर्व पदाधिकारीगण से परामर्श लेते रहें और छोटे-छोटे टिप्स लेकर मंडल को आगे बढ़ाएं। मुबई महिला मंडल मंत्री संगीता चपलोत ने पूज्यवरों के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की और कहा कि आठ महीने कै कार्यकाल में मंडल की हर एक बहिन से अपनत्व मिला और नन्दनवन के चातुर्मास में प्रत्येक क्षेत्र की बहिनों का श्रम व सहयोग मिला। यह मेरे जीवन का स्वर्णिम सफर रहा। भाग्यवती कच्छारा व रेखा कोठारी ने मंगलकामनाएं प्रस्तुत की। कार्यसमिति सदस्य स्वीटी लोढ़ा ने पैनल डिस्कशन के अंतर्गत 1981 से 2024 तक के सभी पूर्वाध्यक्षों के विकास की पगडंडी पर उनके कृर्तत्व, उनके सफर के संस्मरणों व अनुभवों को उनकी ही जुबानी सदन में सभी ने सुना। प्रेमलता सिसोदिया ने अपने अनुभव साझा करते हुए बताया कि कैसे बिखरी हुई शक्ति व संगठन को मजबूती प्रदान की तथा सोई हुई बहनों को जागृत किया। अब नवगठित मंडलों के इन नए अध्यक्षों को पुराने अनुभवों के साथ नई शुरुआत करनी है। मंजू छाजेड़ व सुनिता परमार ने अनुभवों को साझा करते हुए सभी को स्नेह व सौहार्द से आगे बढ़ने का संदेश दिया। मुम्बई महिला मंडल के विकास के आयामों की झलकियों को वीडियो क्लिप्स के माध्यम से दिखाया गया। कोषाध्यक्ष सुनीता सुतरिया ने आय व्यय का ब्यौरा प्रस्तुत किया। कन्या मंडल सह प्रभारी पूनम परमार ने प्रतिवेदन की प्रस्तुति दी और संयोजिका काजल मादरेचा ने वर्ष 2015 से 2024 तक के प्रतिवेदन की मुख्य झलकियां वीडियो के माध्यम से सभी के सामने प्रस्तुत की। कन्या मंडल प्रभारी मधु बाफना ने धन्यवाद प्रेषित करते हुए आगे बढ़ने के लिए प्रेरित किया। कन्या मंडल सहसंयोजिका नेहा सोलंकी व निकिता चैहान का विशेष श्रम रहा। अध्यक्षा विमला कोठारी ने अपनी टीम सहित कार्यकारिणी को निरस्त किया व अपने पद का विसर्जन किया। राष्ट्रीय अध्यक्ष सरिता डागा की अध्यक्षता में नवगठित 46 महिला मंडल की नवनियुक्त अध्यक्षाओं ने शपथ ग्रहण की व महामंत्री नीतू ओस्तवाल ने मंडल के नीति निर्देशों से सभी को अवगत करवाया। शपथ विधि की प्रक्रिया में राष्ट्रीय कार्यकारिणी कोषाध्यक्ष तरुणा बोहरा, सदस्य निर्मला चण्डालिया, अलका मेहता का सराहनीय सहयोग प्राप्त हुआ। सभी ने नवगठित मंडलों के प्रति शुभकामना के स्वर प्रेषित किए। मंच का संचालन मुम्बई महिला मंडल सहमंत्री सरिता ढ़ालावत ने किया। आभार ज्ञापन ई-मीडिया प्रभारी अनिता सियांल ने किया। आयोजन की सफलता में कार्यसमिति सदस्या कांता डूंगरवाल, सुचिता कोठारी, सारिका बाफना, शिला चंडालिया, वंदना चपलोत, रेखा कोठारी, खुशी लोढ़ा, सुनीता हिरण, शिप्रा सिंघी, वनिता बाफना, श्वेता पोखरना के साथ टॉप 9 टीम का सराहनीय सहयोग रहा। आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास व्यवस्था समिति, मुम्बई के अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, अणुव्रत विश्व भारती के उपाध्यक्ष विनोद कोठारी, वाशी सभाध्यक्ष विनोद बाफना, वरिष्ठ उपाध्यक्ष बाबूलाल बाफना, दिलीप चपलोत की गरिमामयी उपस्थिति रही। अधिवेशन में लगभग 1200 बहिनों की उपस्थिति रही।

नवरंगपुर, अहमदाबाद

अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार नवरंगपुर तेरापंथ महिला मंडल द्वारा दीनदयाल कन्या अनाथ आश्रम में 'अनमोल रिश्ता सास बहू' कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से तथा प्रेरणा गीत से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्ष बॉबी जैन ने सभी का स्वागत करते हुए सास बहू के अनमोल रिश्ते पर विचार रखे और बताया कि यह नाजुक रिश्ता कैसे मधुर बनाया जा सकता है। आश्रम की बालिकाओं ने बड़े उत्साह से कार्यक्रम में सहभागिता की।

उन्हें यह समझाया गया कि आगे जाकर ससुराल में कैसे सास के साथ मां का रिश्ता बनाना है और ससुराल में बहू बनकर नहीं बेटी बन कर रहना है। तेरापंथ महिला मंडल की बहिनों द्वारा आश्रम की बालिकाओं को खाद्य सामग्री प्रदान की गई। अंत में बहिन पूजा ने सभी का आभार व्यक्त किया।

विद्यार्थियों के बीच अणुव्रत डिजिटल डिटॉक्स, एलिवेटस द रियल हाईट्स् विषय पर सेमिनार

मुलुंड, मुम्बई।

प्रिन्स ऑफ मुंबई से अलंकृत सांस्कृतिक और धर्म नगरी मुलुंड में अणुव्रत यात्रा प्रवर्तक आचार्यश्री महाश्रमण जी के सान्निध्य में विद्यार्थियों के लिए 'डिजिटल डिटॉक्स, एलिवेट द रियल हाईट्स और नो टू ड्रग्स' विषय पर विशाल सेमिनार आयोजित हुआ। आज यहां महाकवि कालिदास नाट्य मंदिर हॉल में आयोजित सेमिनार में ग्यारह विद्यालयों एवं महाविद्यालयों के लगभग एक हजार छात्र छात्राओं ने भाग लिया। अणुव्रत अनुशास्ता आचार्य प्रवर ने उद्बोधन प्रदान करते हुए कहा- 'डिजिटल डिटॉक्स एवं नशामुक्ति से जीवन शांति से जिया जा सकता है।'

अणुव्रत अनुशास्ता ने संदेश देते हुए कहा- डिजिटल डिटॉक्स एवं नशामुक्ति से जीवन शांति से जिया जा सकता है।

चार अलग-अलग विषयों पर मोटिवेटर चिराग पामेचा के संयोजन में स्वेता लोढा, विवेक संघवी, डॉ. सोनल जैन, रेणुका कोठारी ने विद्यार्थियों को रूचिपूर्ण ढंग से खेल-खेल में जानकारी उपलब्ध कराई। विशेष अतिथि जोन सात के पुलिस कमिश्नर पुरूषोत्तम कराड ने विद्यार्थियों से फेस टू फेस बात कर ड्रग्स और डिजिटल डिटॉक्स, एआई के खतरों से बचने के उपाय बताए। आचार्यश्री महाश्रमण जी के सुशिष्या मुनि मननकुमार जी, मुनि अभिजीतकुमार जी, मुनि गौरवकुमार जी एवं मुनि जागृतकुमार जी ने आधुनिक खतरों से बचने की प्रेरणा और अध्यात्म योग से जीवन को भावित करते हुए अणुव्रत के नियमों को जीवन में लागू करने का संकल्प करवाया। कार्यक्रम को सफल बनाने में गजेन्द्र पीपाड़ा, विजय पटवारी, रवि पटवारी, राकेश सिंघवी, कपिल बागरेचा, भरत कोठारी आदि ने श्रम किया।

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

मुख्य आकर्षण रहा कपल साइकिल्स

'टीपीएफ संकल्प साइक्लोथोन' का हुआ भव्य आयोजन

कोलकाता।

रापंथ प्रोफेशनल फोरम के तत्वावधान में टीपीएफ-कोलकाता एवं हावड़ा रीजन शाखा द्वारा टीपीएफ के राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज ओस्तवाल की अध्यक्षता में **'टीपीएफ संकल्प साइक्लोथोन'** का इको पार्क, कोलकाता में भव्य आयोजन हुआ। उत्सुकता के मद्देनजर कार्यकर्ता इस कड़ाके की ठंड में भी सुबह से ही रजिस्ट्रेशन व अन्य तैयारियों के लिए जुटे हुए थे।

इस इवेंट की शुरुआत में सर्वप्रथम स्टेज पर राष्ट्रीय अध्यक्ष को आमंत्रित किया गया। उसके पश्चात नमस्कार महामंत्र व टीपीएफ गीत द्वारा इस इवेंट की शुरुआत का शंखनाद किया गया। उसके तट पश्चात हमारे राष्ट्रीय स्पॉन्सर, इसी क्रम में अतिथिगण, हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष, साइक्लोट्रॉनकन्वीनर, सबको सम्मानित भी किया गया। हिडको के अध्यक्ष देबाशीष सेन, पेरा एथेलीट प्रोबिन सरकार की गरिमामय उपस्थिति रही। उन्हें भी सम्मानित किया गया। हमारी राष्ट्रीय अध्यक्ष ने हुडको के एमडी देवाशीस सेन से वार्तालाप कर इस साइक्लोट्रॉन इवेंट में संक्षेप में बताया कि हमारी टीपीएफ की गतिविधियां पूरे भारत में किस तरह समाज को अपनी सेवाएं प्रदान कर रहा हैं। टीपीएफ नेक्स्टजेन के राष्ट्रीय कन्वीनर श्रेयांश ने टीपीएफ की गतिविधियों एवं साइक्लोथोन के बारे में जानकारी प्रदान की।

साइकिलिंग के साथ साथ सभी ने योगा, जुंबा आदि का भरपूर आनंद लिया। बच्चों के लिए अलग से किड्स कॉर्नर था जहां पर बच्चों ने खूब आनंद लिये। हमारे राष्ट्रीय अध्यक्ष पंकज व सतपाल ने झंडा लहराकर गुब्बारे को हवा में उड़ा कर, साइकिलिस्ट को साइकिल्स चलाने का ग्रीन सिग्नल दिया। दो राउंड में लगभग 7 किलोमीटर सभी लोगों ने साइकिल चलाई। यहां का मुख्य आकर्षण कपल साइकिल्स था। इसलिए जिनको साइकलिंग नहीं आती थी वह भी इस साइकिलिंग का आनंद उठा पाए। लगातार स्टेज की स्क्रीन पर टीपीएफ की गतिविधियों का वीडियो चलता रहा ताकि वहां पर मौजूद सभी को टीपीएफ के बारे में पूर्णतः जानकारी मिल सके। फोटो स्टैंडिंग पर सब ने खूब तस्वीर खिंचवाई। सब पार्टिसिपेंट्स को अल्पाहार वितरित किया गया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

लगातार स्टेज की स्क्रीन पर टीपीएफ की गतिविधियों का वीडियो चलता रहा

इस अवसर पर टीपीएफ ईस्ट जोन-1 की मंत्री बबिता बैद, साउथ कोलकाता अध्यक्ष प्रवीण सिरोहीया, कोलकाता जनरल अध्यक्ष खुशबू नाहटा, पूर्वांचल अध्यक्ष बिनोद दुगड़, साउथ हावड़ा अध्यक्ष खुशबू कोठारी, नॉर्थ हावड़ा अध्यक्ष डॉ अरिहंत सिंघी, प्रकाश मालू, संजय जैन, जय चाँद मालू, सुशील चोरडिया, सुशील चोपड़ा, गणेश बैद, अजय भंसाली, राजेश घोड़ावत, कंचन सिरोहिया, चमन चिंडालिया, रोहित दूगड, प्रवीण सुराणा, प्रतीक दूगड, सुनील बैद, सौरभ श्यामसुखा, गौरव कोठरी, टीपीएफ फ्यूचुरा विंग सहित स्थानीय टीपीएफ परिवार की गरिमामय उपस्थिति रही ।

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अनुशासित एवं मर्यादित जीवन बन सकता है : साध्वी स्वर्णरेखा

सचिन, गुजरात।

युगप्रधान आचार्य महाश्रमण की विदुषी सुशिष्या साध्वी स्वर्णरेखा के सान्निध्य में 160वां मर्यादा महोत्सव उत्साह के साथ मनाया गया। साध्वीश्री ने श्रद्धालुओं को संबोधित करते फरमाया - तेरापंथ धर्मसंघ में जीने वाला जीवन को अनुशासित एवं मर्यादित बना सकता है क्योंकि मर्यादा-अनुशासन जन्म के साथ ही जन्मघूंटी के रूप में मिली हुई है।

तेरापंथ के प्रथम आचार्य, चतुर्थ आचार्य कोई साधारण आचार्य नहीं थे, भिन्न-भिन्न मति एवं गति वालों को मर्यादा के खूंटे में बांध दिया। वे कांटों की शैय्या पर सोए तो फूलों की शैय्या पर भी सोए और सबसे अधिक समय तक उसूलों की शैय्या पर सोए। ज्ञान योग से आगमों का मंथन कर सत्य का साक्षात्कार किया। कर्म योग से क्रांति की और सबको शांति-सुख की श्वास लेने के लिए मर्यादा के आसन पर बिठा दिया। इस अवसर पर साध्वी सुधांशुप्रभा ने अपने विचार रखे। स्थानीय युवक परिषद, महिला मंडल ने अपनी भिन्न-भिन्न प्रस्तुतियों को सुंदरता से पेश किया।

ज्ञान योग से आगमों का मंथन कर सत्य का साक्षात्कार किया।

स्थानीय सभाध्यक्ष अरुण आंचलिया, गुवाहाटी सभाध्यक्ष बजरंग कुमार सुराणा, सिलीगुड़ी सभाध्यक्ष रूपचंद कोठारी, बंगाल के आंचलिक ज्ञानशाला प्रभारी लक्ष्मीपत गोलछा आदि ने अपने विचार वक्तव्य के माध्यम से रखे। सिलीगुड़ी सभाध्यक्ष ने श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन किया।

कार्यक्रम का प्रारंभ प्रियंका बुच्चा के मंगल संगान से हुआ तथा संचालन महिला मंडल अध्यक्ष वीणा सुराणा किया।

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाईन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

संक्षिप्त खबर

कैंसर जागरूकता अभियान

कोयंबटूर। अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के निर्देशानुसार कोयंबटूर तेरापंथ महिला मंडल ने कैंसर अवेयरनेस सेमिनार का आयोजन तेरापंथ भवन में किया। कार्यक्रम का शुभारंभ नमस्कार महामंत्र से किया गया। तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा मंजू सेठिया ने सभी का स्वागत व अभिनंदन किया। पहली मुख्य वक्ता डॉ. भारती ने कैंसर के बारे में बहुत ही सुंदर व सरल तरीके से समझाया। उन्होंने कैंसर क्या और क्यों होता है, इस विषय में जानकारी देते हुए बताया कि हमारे शरीर की नियमित जांच से अनेक गंभीर बीमारियों से निजात पाई जा सकती है। दूसरी मुख्य वक्ता नेचुरोपैथी व डाइटीशियन डॉ. उर्वशी लूनिया ने बताया कि रोग हमारे शरीर में क्यों होते हैं। छोटे बड़े सभी रोगों का मुख्य कारण हमारा खान-पान, रहन-सहन और तनाव भरी जीवन शैली होती है। दोनों डॉक्टरों ने अखिल भारतीय तेरापंथ महिला मंडल के इस अभियान की बहुत ही सराहना की। धन्यवाद ज्ञापन उपाध्यक्ष मोनिका लुनिया ने किया। सेमिनार का कुशल संचालन अपराजिता नाहटा ने किया। सेमिनार में बहिनों की अच्छी उपस्थिति रही।

सेवा कार्य संपन्न

पूर्वांचल, कोलकाता। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् द्वारा निर्धारित आयाम सेवा-संस्कार-संगठन को पूर्ण साकार करते हुए तेरापंथ युवक परिषद्, पूर्वांचल-कोलकाता एवं तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता ने साथ मिलकर सेवा कार्य हेतू श्री कृष्णा प्रणामि कनकुग्राची में 35 वृद्ध लोगों को सुबह का नाश्ता एवं टूथ ब्रश वितरण किया। संस्थान के संचालक ने कहा कि तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ किशोर मंडल, पूर्वांचल-कोलकाता समय-समय पर इन बुजुर्गों को सहयोग करती रहती है और तेरापंथ युवक परिषद के उज्जवल भविष्य की मंगल कामना की। उन्होंने सुनील कुमार मालू परिवार (जो की इस सेवा कार्य के प्रायोजक थे), तेरापंथ युवक परिषद एवं तेरापंथ किशोर मंडल के प्रति आभार व्यक्त करते हुए कहा कि उनके इस कार्य से वृद्ध बेसहारा लोगों के चेहरों पर मुस्कान आ गई। सर्वप्रथम नमस्कार महामंत्र का जाप किया गया। तत्पश्चात सभी साथियों ने उत्साह पूर्वक भोजन वितरण में सहयोग किया।

एमबीबीडी रिदम 2024 फरवरी माह का आयोजन

सूरत। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद सूरत द्वारा दो रक्तदान शिविरों का आयोजन किया गया, जिसके अंतर्गत पहला शिविर एनम हॉस्पिटल, वेसु में किया गया। डॉ. रिनी मोजेस द्वारा शिविर में आए हुए सभी रक्तदाताओं को रक्तदान करने के फायदे के बारे में बताया गया। रक्तदान शिविर में 18 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। दूसरा रक्तदान शिविर प्राइम आर्केड में अडाजन मार्केट एसोसिएशन द्वारा किया गया। मार्केट एसोसिएशन के अध्यक्ष इस मानव सेवा कार्य में सहयोग देने के लिए स्वयं शिविर में आए और सभी दुकानदारों को रक्तदान करने के लिए आह्वान किया। इस शिविर में कुल 34 यूनिट रक्त संग्रह हुआ। अभातेयुप के राष्ट्रीय संगठन मंत्री अमित सेठिया, एमबीबीडी राष्ट्रीय सहप्रभारी सौरभ पटावरी, अभातेयुप संभाग प्रमुख कुलदीप कोठारी एवं अभातेयुप टीम के सदस्यों ने दोनों शिविरों का अवलोकन किया और कार्यकर्त्ताओं द्वारा की गई व्यवस्थाओं और उनके श्रम की सराहना की। तेयुप सूरत अध्यक्ष सचिन चंडालिया एवं मंत्री द्वारा डॉ. रिनी मोजेस एवं मार्केट अध्यक्ष का सम्मान किया गया। एमबीडीडी से जुड़े सदस्यों द्वारा निष्ठापूर्ण सेवाएं दी गई ।

आदमी के जीवन में ज्ञान का बहुत महत्त्व है। ज्ञानपूर्वक किया जाने वाला कार्य ठीक हो सकता है।
-आचार्य श्री महाश्रमण

कार्यशाला

इंटरिम यूनियन बजट 2024-2025 का हुआ गहन विश्लेषण

साउथ, कोलकाता।

केंद्रीय वित्त मंत्री निर्मला सीतारमण ने इंटरिम बजट 2024-2025 देश के समक्ष पेश किया। इस महत्वपूर्ण विषय को मद्देनजर रखते हुए तेरापंथ प्रोफेशनल फोरम, कोलकाता साउथ ने 4 फरवरी 2024 रविवार सायं 5:00 बजे से इंटरिम यूनियन बजट 2024-2025 की गहन विश्लेषण एवं अन्य वर्तमान असेसमेंट में आने वाली दिक्कतों का निवारण की कार्यशाला का आयोजन 'आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर, कोलकाता' में किया गया।

फोरम के कोषाध्यक्ष गौरव मालू ने कार्यक्रम में सभी लोगों का गर्मजोशी से स्वागत किया। टीपीएफ नेशनल फ्यूचूरा को कन्वेनर रोहित दुगड़ एवं टीपीएफ नेशनल फेमिना को कन्वेनर कंचन सिरोहिया ने मंगलाचरण द्वारा कार्यक्रम की पावन शुरुआत की। टीपीएफ साउथ कोलकाता के कर्मठ और ऊर्जावान अध्यक्ष प्रवीण कुमार सिरोहिया ने अपने अध्यक्षीय स्वागत व्यक्तव्य में सभी का हार्दिक अभिनंदन किया। उन्होंने कहा कि देश का भविष्य बहुत कुछ उसके वित्त बजट पर होता है। सही नीति इसे प्रगति के रास्ते पर ले जाती है। उन्होंने टीपीएफ के सभी आयामों के बारे उपस्थित लोगों को जानकारी दी। टीपीएफ के ईस्ट जोन-1 की मंत्री बबिता बैद ने सभी का स्वागत करते कहा कि टीपीएफ के आगामी कार्यक्रम के बारे में विस्तार से जानकारी दी और एएमकेसी का सदुपयोग लेने के लिए कहा। इस कार्यशाला में फोरम के वरिष्ठ सदस्य श्री सुमेरमल सुराना का महत्वपूर्ण योगदान रहा। उन्होंने इनकम टैक्स में सभी के लिए बहुत ही उपयोगी जानकारियां और सुझाव दिए। उन्होंने बजट एवं असेसमेंट से संबंधित सारे इनकम टैक्स के पहलुओं को समझाते हुए लोगों का ज्ञानवर्धन किया। प्रवीण कुमार सुराना ने भी सभी के लिए जीएसटी से संबंधित बहुत ही उपयोगी जानकारियां और सुझाव दिए।

कंचन सिरोहिया ने कार्यक्रम में पधारे हुए सभी अतिथियों, वक्ताओं, सदस्यों एवम् अन्य संस्थाओं के गणमान्य व्यक्तियों का इस कार्यक्रम में पधारने के लिए अपनी संपूर्ण टीम की तरफ से आभार ज्ञापन किया और भविष्य में ऐसे कार्यक्रम करने के लिए टीम की प्रतिबद्धता जताई। कार्यक्रम में टीपीएफ के भूतपूर्व मंत्री सुशील चोरड़िया, टीपीएफ ईस्ट जोन-1 की मंत्री बबिता बैद, फेमिना नेशनल को कन्वेनर कंचन सिरोहिया, टीपीएफ नेशनल फ्यूचूरा को कन्वेनर रोहित दुगड़, साउथ सभा के मंत्री कमल सेठिया, अणुव्रत समिति, कोलकाता के मंत्री नवीन दुगड़ एवं ईडब्लूसी सदस्य मोहित भूतोड़िया, टीपीएफ कोलकाता पूर्वांचल के अध्यक्ष बिनोद दुगड़, मंत्री सुनील बैद, टीपीएफ कोलकाता साउथ के निवर्तमान अध्यक्ष आलोक चोपड़ा, पूर्व उपाध्यक्ष जतनलाल बरड़िया, वरिष्ठ सदस्य पदम सिंह रायजादा, सुनील कुमार नाहटा, मंत्री हर्ष दुगड़, सहमंत्री सौरभ श्यामसूखा एवं अन्य सदस्यों आदि की उपस्थिति रही। कार्यक्रम का संचालन कोषाध्यक्ष गौरव मालू ने किया।

अखिल भारतीय तेरापंथ टाइम्स

कार्यशाला का आयोजन 'आचार्य महाप्रज्ञ नॉलेज सेंटर, कोलकाता' में किया गया।

व्यक्तित्व विकास कार्यशाला : 'आसमान छू कर दिखाना है' का आयोजन

बैंगलोर।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वाधान में तेरापंथ युवक परिषद राजराजेश्वरीनगर द्वारा बैंगलोर स्तरीय व्यक्तित्व विकास कार्यशाला 'आसमान छू कर दिखाना है' का आयोजन तेरापंथ भवन आर.आर. नगर में किया गया।

कार्यक्रम का शुभारंभ सरगम फाइनलिस्ट गुलाब बांठिया द्वारा मंगलाचरण से किया गया। श्रावक निष्ठा पत्र का वाचन अभातेयुप राष्ट्रीय उपाध्यक्ष पवन मांडोत द्वारा किया गया। पवन मांडोत ने कार्यशाला का आगाज करते हुए अपने वक्तव्य से युवाओं में जोश भरते हुए कहा कि परिषद अभातेयुप द्वारा दिए हुए हर काम को करने के लिए तत्पर है।

मुख्य वक्ता विक्रम सेठिया ने बताया कि आसमान छूने के लिए यह जरूरी नहीं कि आप कितने सफल हैं बल्कि यह देखें कि आप कितने सफल हो सकते हो। आपके द्वारा की गई कोशिश आपको सफलता के नये मुकाम पर पहुंचायेगी।

उन्होंने आगे कहा कि परिस्थितियों का बहाना बनाने वाला आगे नहीं बढ सकता है। परिस्थिति तो राजा राम के लिये भी उपयुक्त नहीं थी परंतु उन्होंने परिस्थिति को नहीं बल्कि लक्ष्य पर ध्यान केन्द्रित रखा और उन्होंने विजय प्राप्त की। उन्होंने प्रेरणा देते हुए कहा कि दुनिया परिस्थिति नहीं अपितु परिणाम देखती है। संभाग प्रमुख अमित दक, टीपीएफ राष्ट्रीय सहमंत्री लक्ष्मीपत मालू, ट्रस्ट अध्यक्ष मनोज डागा, तेरापंथ महिला मंडल अध्यक्षा सुमन पटावरी ने अपने अपने विचार व्यक्त किए।

इस कार्यशाला के मुख्य प्रायोजक गुलाब देवी छाजेड़ एवं सहप्रायोजक गणपत दीपक कोठारी, उम्मेदसिंह जय पटावरी थे। कार्यशाला का सफल संचालन मंत्री धर्मेश नाहर व आभार ज्ञापन पंकज बैद ने किया।

संक्षिप्त खबर

हर्षोल्लास से मना बसन्त उत्सव

लक्ष्मी नगर, दिल्ली। आज यहां अखिल भारतीय संस्था तरुण मित्र परिषद द्वारा परिषद कार्यालय सभागार, लक्ष्मी नगर मे बसंत उत्सव का आयोजन किया गया। महासचिव अशोक जैन ने बताया कि इस भव्य कार्यक्रम में नन्हें मुन्ने बाल कलाकारों ने रंग बिरंगें परिधानों मे हर्षोल्लास के साथ सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत कर, उपस्थित जन समुदाय का मन मोह लिया। नन्दिनी जैन के निर्देशन में कार्यक्रम मे मुख्य अतिथि निगम पार्षद अल्का राघव व परिषद के अध्यक्ष मनोज कुमार जैन (मनोनीत निगम पार्षद) ने कार्यक्रम की प्रशंसा करते हुए सभी प्रतिभागियों को उपहार भेंट कर प्रोत्साहित किया। इस अवसर पर परिषद के संस्थापक अशोक जैन को 80वें वर्ष मे प्रवेश करने पर ढेरसारी शुभकामनाएं प्रेषित करते हुए उनके स्वस्थ व दीर्घायु की कामना की।

रक्तदान शिविर संपन्न

वड़ोदरा। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद वड़ोदरा ने रक्तदान शिविर का आयोजन अलंकार मार्बल्स मकरपुरा में किया। रक्तदान शिविर में तेरापंथी सभा तथा तेरापंथ युवक परिषद के सदस्यों का सराहनीय सहयोग व सहभागिता रही। इस शिविर में कुल 41 यूनिट ब्लड एकत्रित हुआ। शिविर के सफल आयोजन में पंकज बोलिया, अशोक बोलिया एवं भेरुलाल पीतलीया ने सहयोग दिया। आयोजन में वड़ोदरा तेरापंथी सभा मंत्री दीपक श्रीमाल एवं तेयुप अध्यक्ष हितेश महनोत और मंत्री सुमित कोठारी विशेष रूप से उपस्थित रहे।

निःशुल्क मेगा हेल्थ चेकअप

साउथ हावड़ा। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के त्रिआयाम सेवा, संस्कार, संगठन के अंतर्गत तेरापंथ युवक परिषद, साउथ हावड़ा द्वारा लायंस क्लब ऑफ कोलकाता एक्सीलेंस एवं राघव रेजिडेंट्स वेलफेयर एसोसिएशन के सहयोग से निःशुल्क मेगा हेल्थ चेक अप कैंप का आयोजन राघव रेसीडेंसी में हुआ। परिषद के अध्यक्ष गगनदीप बैद ने उपस्थित सभी महानुभावों का स्वागत-अभिनन्दन किया। कैंप में फोर्टिस हेल्थकेयर टीम के सहयोग से डॉक्टर्स की उपस्थिति में ब्लड शुगर, बीएमडी जैसे विभिन्न प्रकार के स्वास्थ्य परीक्षण किये गये, जिसमें 111 लोगों का चेक अप हुआ। बीमारियों के उपचार के लिए संबंधित विभिन्न तरह के चेक अप की सुविधा समाज के लोगों के किए उपलब्ध करवाई गई। कार्यक्रम में अभातेयुप उपाध्यक्ष हितेंद्र बैद, विक्रम भंडारी, मंत्री अमित बेगवानी, सहमंत्री सुनीत नाहटा, कोषाध्यक्ष विजयराज पगारिया, संगठन मंत्री रोहित बैद सहित हेल्थ चेक अप के संयोजक अभिषेक खटेड़ आदि उपस्थित रहे।

हर्षोल्लास के साथ मना स्थापना दिवस

गंगाशहर। अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद के तत्वावधान में तेरापंथ युवक परिषद गंगाशहर द्वारा संचालित आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर के सफलतम तीन वर्ष की परिसंपन्नता पर जैन संस्कार विधि से चतुर्थ स्थापना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर एटीडीसी के संयोजक पीयूष लूणिया ने एटीडीसी की तीन वर्षों के कार्यो की विस्तारपूर्वक जानकारी दी तथा मानवता के प्रति की जा रही सेवाओं के बारे में बताया। एटीडीसी प्रभारी विजेंद्र छाजेड़ ने अपने भाव व्यक्त किये। तेरापंथी सभा के अध्यक्ष अमरचंद सोनी ने कहा कि आचार्य तुलसी डायग्नोस्टिक सेंटर को तेरापंथ युवक परिषद ट्रस्ट बहुत अच्छे ढंग से संचालित कर रही है। जैन संस्कारक देवेंद्र कुमार डागा ने जैन संस्कार विधि के बारे में विस्तार से विवेचना करते हुए सबको इसके बारे में जानकारी अवगत करवाई।

मर्यादा की रक्षा करने से हो सकती है स्वयं की भी रक्षाः आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, मुम्बई।
११ फरवरी, २०२४

मर्यादा के महामानव आचार्यश्री महाश्रमण जी ने आज प्रातः १६०वें मर्यादा महोत्सव के आयोजन हेतु वाशी में मंगल प्रवेश किया। महामनीषी आचार्यप्रवर ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि आज मर्यादा महोत्सव के संदर्भ में बृहत्तर मुंबई में नवी मुंबई के वाशी में हमारा आना हुआ है। हमारे धर्मसंघ में चातुर्मास के बाद मर्यादा महोत्सव का महत्त्व होता है, वह हमारे इतिहास में जुड़ जाता है।

मर्यादा महोत्सव हमारे धर्मसंघ में शताधिक वर्षों से मनाया जा रहा है। आद्य प्रवर्तक आचार्य भिक्षु से संबंधित यह धर्मसंघ है। मर्यादा महोत्सव का शुभारंभ पूज्य चतुर्थ आचार्य जीतमल जी के शासनकाल में हुआ था। अर्थात् मर्यादा महोत्सव के प्रणेता श्रीमद् जयाचार्य है। उत्तरवर्ती आचार्यों ने इसे आगे बढ़ाया है।

मर्यादा बहुत महत्त्वपूर्ण तत्त्व होता है। मर्यादा की रक्षा करने से स्वयं की रक्षा भी हो सकती है। हम धर्म की रक्षा करेंगे तो धर्म भी हमारी रक्षा करता है। हम मर्यादा की शोभा-आभा बढ़ाएंगे तो हमारी आभा भी सुरक्षित रह सकेगी। आत्मानुशासन का विकास हमारे जीवन में होना चाहिए। आत्मानुशासन का निर्देश है कि मैं स्वयं संयम और तप के द्वारा आत्मा को दांत-अनुशासित रखूँ। आत्मानुशासन बड़े व छोटे, दोनों में होना चाहिए। दूसरों को अनुशासन में रखना मुश्किल हो सकता है पर जहाँ आत्मानुशासन की बात हो वहां अनुशासन रखने में सफलता प्राप्त हो सकती है।

हमारे धर्मसंघ में आचार्य को बहुत बड़ा, महिमा मंडित स्थान दिया गया है। सत्ता का केंद्र आचार्य में निहित किया गया है। सर्वोच्च अनुशास्ता का दायित्व आचार्य को निभाना होता है। तेरापंथ के जनक-परमपूज्य आचार्य भिक्षु हुए हैं। अनुशासन की परंपरा को उत्तरवर्ती आचार्यों ने आगे से आगे निरंतरित रखने का प्रयास किया है। इस संदर्भ में पूज्यप्रवर के निर्देशानुसार मुख्यमुनिश्री महावीरकुमारजी व मुनि दिनेशकुमारजी ने मुनि मोहनलाल जी 'आमेट' द्वारा रचित गीत 'स्वामीजी एकर तो आकर देखो पाछा आयने' गीत के 'गुरु ने बणाया पूरा बादशाह' पद्य का सुमधुर संगान किया। आचार्य प्रवर ने आगे फरमाया कि हमारे धर्मसंघ में एकतंत्र-आचार्य तंत्र है, सत्ता का केंद्र आचार्य को बनाया गया है। सारी व्यवस्थाएँ आचार्य के अनुशासन में होती हैं। मर्यादा महोत्सव भी आचार्य की परिधि में एकत्रित होने की बात है। केंद्र का महत्त्व परिधि के आधार पर

बढ़ता है। संघ परिधि है, आचार्य केंद्र है। जैसे इंद्र देवों के मध्य शोभायमान होता है, वैसे ही आचार्य भिक्षुओं के मध्य शोभायमान होते हैं। इसलिए संघ-संगठन का भी महत्व है। आध्यात्मिक संदर्भ में श्रावक-श्राविकाओं के अनुशास्ता भी आचार्य होते हैं। हमारा संगठन, शासन और आत्मानुशासन मजबूत हो। हमारी साधना, आचार निष्ठा, मर्यादा निष्ठा पुष्ट रहे।

एक संदर्भ में हमारे यहाँ लोकतंत्र भी है। यहां विचार-विमर्श होता है, विचारों को सुनने का, कहने का अवसर दिया जाता है, उसके बाद निर्णय होता है। निर्णय एकतंत्र के अंतर्गत रहता है। हमारी सबसे बड़ी मर्यादा है कि सर्व साधु-साध्वियाँ एक आचार्य की आज्ञा में रहें। ये मर्यादाएं हमारी सुरक्षा करने वाली हैं। हम भी इनकी सुरक्षा करने का प्रयास करते रहें। संविधान का पालन हर जगह उचित होता है। मर्यादाओं के प्रति हमारा सम्मान का भाव हो। परमपूज्य गुरुदेव तुलसी के सान्निध्य में सर्वाधिक मर्यादा महोत्सव हुए हैं। आचार्य तुलसी और आचार्य महाप्रज्ञ जी के सान्निध्य में भी मुंबई में मर्यादा महोत्सव समारोह हुआ था। आज मर्यादा महोत्सव का मंगल प्रवेश हो गया है। धर्म सर्वश्रेष्ठ मंगल है, अहिंसा, संयम और तप रूपी मंगल हमेशा हमारे साथ रहे। साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभा जी ने कहा- गरल सत्य है, किंतु सुधा का, नहीं कहीं भी अता पता है।विटप बहुत है, किंतु कल्पतरू, नहीं कहीं खोजे मिलता है।। दुनिया का सत्य है कि इसमें चारों ओर विष व्याप्त हो रहा है। कषाय रूपी विष फैल रहा है जिसके कारण मानव मन दूषित, अशांत, असंतुलित, तनाव ग्रस्त, दुखी हो रहा है। अशांत को शांत करने, तनाव से मुक्त करने, दुखों से मुक्त करने के लिए वाशी में अमृत पुरुष का शुभागमन हुआ है। ठाणं सूत्र में १० प्रकार के कल्पवृक्षों का उल्लेख मिलता है। आज एक कल्पवृक्ष वाशी में आया है, जिनके सामने बैठकर हम हमारी इच्छाएँ पूरी कर सकते हैं। पूज्यप्रवर के आशीष से हम आगे विकास कर सकते हैं। यह जंगम कल्पतरु है, इसके द्वारा व्यक्ति ज्ञान को प्राप्त कर सकता है, विवेक चेतना को जागृत कर सकता है। आचार्यवर हित की चेतना, उपशम की चेतना और तत्त्व की चेतना को जागृत करने और साथ में मर्यादाओं का उत्सव मनाने पधारें हैं। पूज्यप्रवर की अभिवंदना में प्रवास व्यवस्था समिति अध्यक्ष मदनलाल तातेड़, स्वागताध्यक्ष चांदरतन दुगड़, सभाध्यक्ष विनोद बाफना, मनोहर गोखरू, ललित बाफना, तेयुप अध्यक्ष महावीर सोनी ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल एवं तेरापंथ युवक परिषद् ने अलग अलग स्वागत गीत की प्रस्तुति दी। ज्ञानार्थी गर्वित सोनी ने 'प्राणी समकित किण विधि आई' की सुंदर प्रस्तुति दी। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

सद्गुणों से मानव जीवन को बनाएं सार्थकः आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, मुम्बई।
१३ फरवरी, २०२४

शासन सम्राट, जन-जन के अंतर्मन के भगवान आचार्यश्री महाश्रमण जी ने मंगल देशना प्रदान करते हुए फरमाया कि हमें मनुष्य जीवन उपलब्ध है। ८४ लाख जीव योनियों में यह मानव जीवन मिलना कुछ मुश्किल होता है, वह मुश्किल मानव भव हमें उपलब्ध हुआ है। मनुष्य के पास केवलज्ञान प्राप्त करने की अर्हता भी हो सकती है। सारे मनुष्य केवल ज्ञानी बन जाएं ऐसा नियम तो नहीं है परंतु मनुष्य ही केवलज्ञानी बन सकता है, उच्च कोटि की साधना केवल मनुष्य ही कर सकता है। इस मानव जीवन को हमें सार्थक बनाने का प्रयास करना चाहिए।

अनेकों मनुष्य, महापुरुष इस दुनिया में आए और चले गए। कोई स्थायी नहीं, सभी राही हैं। आदमी का

आयुष्य कब पूरा हो जाए, पता नहीं चलता। जीवन अनिश्चित है, कब मृत्यु आ जाए पता नहीं चलता। जीवन कैसे जीना चाहिए, इस बात पर ध्यान देना चाहिए। हमें जो भी अनुकूलताएँ प्राप्त हैं, वो तो हम पूर्व पुण्य को भोग रहे हैं। पुरानी संचित कमाई काम में आ रही है, और वह पुण्य क्षय हो रहा है, आगे के लिए भी नई तैयारी करनी चाहिए। धर्म और पुण्य में भेद है। पुण्य भौतिक है, धर्म आध्यात्मिक है। धर्म करने से पुण्य का बंध हो सकता है।

मानव जीवन को सार्थक बनाने का एक उपाय है- ईमानदारी। झूठ-कपट-चोरी व्यवहार में न हो तो ईमानदारी पुष्ट रह सकती है। दूसरा उपाय है- जीवन में अहिंसा की चेतना का जागरण हो। आवेश को स्थान न दें, शांति में रहें। तीसरा उपाय है- जीवन में संयम का स्थान हो। नशामुक्त जीवन हो, खान-पान, रहन-सहन में सादगी हो, विचार अच्छे हो। जीवन में कपड़ों के महत्व की अपेक्षा ज्ञान का अधिक महत्व है।

जीवन में सद्गुणों का विकास हो। चेहरे की सुंदरता की अपेक्षा शरीर की सक्षमता या स्वस्थता का महत्त्व है। हम चरित्र को सुंदर बनाने पर ध्यान दें। धर्मोपासना से जीवन को निखारने का प्रयास करें। मर्यादा महोत्सव का त्रिदिवसीय कार्यक्रम कल से शुरू होने वाला है। मर्यादा महोत्सव का हमारे धर्मसंघ में बहुत महत्त्व है। मर्यादाओं के प्रति सम्मान का भाव रहे, मर्यादाओं के पालन में जागरूकता रहे। सृष्टि की अनेक चीजें हैं, सूर्य-चंद्रमा हो या समुद्र हो, सब मर्यादा में रहते हैं। मर्यादा में रहने वाला सुख से रह सकता है। विद्यार्थियों के लिए भी अनुशासन आवश्यक है। कर्त्तव्य और अनुशासन न हो तो लोकतंत्र का देवता मृत्यु और विनाश को प्राप्त हो सकता है। जहां समूह है, वहां मर्यादा का महत्त्व होता है। हम मर्यादा में रहने का मनोभाव रखें, हमारा आत्मानुशासन भी विकास को प्राप्त करे। अणुव्रत विश्व भारती सोसायटी के तत्वावधान में आयोजित अणुव्रत क्रिएटिविटी कंटेस्ट के संदर्भ में आचार्य प्रवर ने फरमाया कि चित्र से चरित्र निर्माण में सहायता मिल सकती है। महापुरुषों का चित्र देखने से श्रद्धा का भाव आ जाता है। अणुव्रत विश्व भारती के तत्वावधान में चित्र प्रतियोगिता चल रही है। अणुव्रत अमृत महोत्सव के अंतर्गत निर्धारित योजनाएँ पूर्ण हों। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

अखिल भारतीय
तेरापंथ टाइम्स
26 फरवरी - 03 मार्च, 2024
12
terapanthtimes.com

जिसकी जैसी भावना होती है, वैसे ही कर्मों का बंध हो जाता है और परिणामस्वरूप वैसा ही फल भोगना पड़ता है।
-आचार्य श्री महाश्रमण

चंड और घमंड प्रकृतियां मोक्ष में हैं बाधकः आचार्यश्री महाश्रमण

सानपाड़ा, मुम्बई।
१० फरवरी, २०२४

> अहिंसा भगवती है, जीवनदाता है। जीवन में अहिंसा धर्म का आचरण हो। हम जीवन में गुस्से से बचने का प्रयास करें, क्षमा का भाव रखें। क्षमा वीर पुरुष का आभूषण होता है।
> -आचार्यश्री महाश्रमण

अणुव्रत अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण जी आज प्रातः नवी मुंबई के सानपाड़ा पधारे। वीतराग समवसरण में पावन प्रेरणा पाथेय प्रदान करते हुए आचार्यप्रवर ने फरमाया कि आध्यात्मिक साहित्य में मोक्ष की बात आती है। जन्म-मरण की परंपरा से छुटकारा पाकर हमेशा के लिए शरीर-मुक्त और दुःख-मुक्त अवस्था में रहना मोक्ष की स्थिति होती है।

प्रश्न होता है- मोक्ष कौन प्राप्त कर सकता है और कौन प्राप्त नहीं कर सकता? अभव्य जीव कभी भी मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकते, भव्य जीव ही मोक्ष में पहुँच सकते हैं। इस संसार में भव्य जीव भी हमेशा रहेंगे, यह भी सिद्धांत है।

मोक्ष प्राप्ति के कुछ बाधक तत्त्व भी बताए गए हैं। जो चंड प्रकृति का होता है, गुस्सा, आवेश करने वाला व्यक्ति उस स्थिति में मोक्ष में नहीं जा सकता। गुस्से के कारण व्यक्ति स्वयं व्याकुल हो सकता है, उससे दूसरों को भी अशांति हो सकती है। ज्यादा गुस्सा सामान्यतया लाभदायी नहीं हो सकता है, वह तो कठिनाई पैदा करने वाला हो सकता है। कुछ व्यक्ति शांत स्वभाव वाले होते हैं, कोई कुछ भी कह दे, शांत रहते हैं। यह भी एक तरह की साधना है।

संत की करुणा और क्षमाशीलता के लिए एक कवि ने कहा है-

संत हृदय नवनीत समाना, कहा कबिन्ह परि कहै न जाना।
निज परिताप द्रवहि नवनीता, पर दुःख द्रवहि सुसंत पुनीता।।

कवि ने कहा कि संत हृदय को मक्खन के समान बताया गया है, परंतु उन्होंने कहना नहीं जाना, क्योंकि मक्खन तो स्वयं को ताप मिलने से पिघलता है पर संत हृदय दूसरों के दुःख को देखकर पिघल जाते हैं। इसलिए संत का हृदय तो नवनीत से भी ऊपर होता है।

अहिंसा भगवती है, जीवनदाता है। जीवन में अहिंसा धर्म का आचरण हो। हम जीवन में गुस्से से बचने का प्रयास करें, क्षमा का भाव रखें। क्षमा वीर पुरुष का आभूषण होता है।

मति और ऋद्धि का घमंड करने वाला भी मोक्ष को प्राप्त नहीं कर सकता। हमें किसी भी चीज का घमंड नहीं करना चाहिए। न ज्ञान का अहंकार, न पैसे का, न ही सत्ता या ऐश्वर्य का अहंकार करना चाहिए। चंड और घमंड दोनों से बचने का प्रयास करें। असंविभागी न बनें, दूसरों का हक छीनने का प्रयास नहीं करें। जीवन में सद्गुणों के भूषण रहें, यह काम्य है।

साध्वीप्रमुखाश्री विश्रुतविभाजी ने अपने मंगल उद्बोधन में कहा कि महापुरुषों की सन्निधि चंद्रमा और चंदन से भी अधिक शीतलता प्रदान करने वाली होती है। जो व्यक्ति शीतल और शांत हो जाता है, वह व्यक्ति अपनी इच्छित वस्तु को प्राप्त कर लेता है। जिज्ञासा का समाधान प्राप्त करने के लिए भी व्यक्ति महापुरुषों की सन्निधि में पहुँचते हैं।

पूज्यप्रवर की सन्निधि में पहुँचने से अनेक लोगों की जिज्ञासाएँ पूर्ण हो जाती है। पूज्यप्रवर के स्वागत में अमृतलाल जैन, तेरापंथ सभा, वाशी के अध्यक्ष विनोद बाफना, जयपुरिया स्कूल के चेयरमैन नवनीत जयपुरिया ने अपनी भावना अभिव्यक्त की। तेरापंथ महिला मंडल ने गीत का संगान किया। कार्यक्रम का संचालन मुनि दिनेश कुमार जी ने किया।

तेरापंथ टाइम्स ऑनलाइन पढ़ने के लिए
terapanthtimes.com

अध्यात्म की साधना में भाव विशुद्धि है महत्त्वपूर्णः आचार्यश्री महाश्रमण

वाशी, मुम्बई।
१२ फरवरी, २०२४

गणपति ने गण में स्थिर रहने की दी पावन प्रेरणा

जिन शासन प्रभावक आचार्यश्री महाश्रमण जी ने पावन प्रेरणा प्रदान करते हुए फरमाया कि पुरुष अनेक चित्तों वाला होता है। आदमी संज्ञी, समनस्क प्राणी है। चित्त शब्द कहीं आत्मा के अर्थ में तो कहीं मन के अर्थ में प्रयुक्त होता है। सचित्त-अचित्त में चित्त अर्थात् आत्मा या चेतना और चित्त का हरण करने वाली स्थितियाँ यहाँ चित्त का अर्थ मन ठीक बैठता है। चित्त शब्द को अनेक अर्थों में देखा जा सकता है।

आठ आत्माएं बताई गई हैं उनमें द्रव्य आत्मा तो एक है, पर भाव आत्माएँ अनेक है। द्रव्य आत्मा भी भाव आत्मा के बिना नहीं हो सकती है। ऐसा कोई समय नहीं आता है जिसमें द्रव्य आत्मा तो है पर भाव आत्मा नहीं है या भाव आत्मा तो है पर द्रव्य आत्मा नहीं है। द्रव्य पर्याय के बिना नहीं रहता और पर्याय द्रव्य के बिना नहीं रहता। सिद्धावस्था-मोक्ष में भी द्रव्य आत्मा अकेली नहीं रहती है, वहाँ भी भाव आत्माएँ ज्ञान, दर्शन और उपयोग आत्माएँ रहती हैं।

चित्त में अनेक भाव उभरते रहते हैं। अध्यात्म की साधना में भाव विशुद्धि बड़ी महत्त्वपूर्ण है। आत्मा को मूल तत्त्व मान लें, मन, वचन, काय और इंद्रियां इसकी परिधि में है, आत्मा केंद्र है। प्रेक्षाध्यान साधना में कहा जाता है कि 'मैं चित्त शुद्धि के लिए ध्यान का प्रयोग कर रहा हूँ।' अध्यात्म की साधना कषाय मुक्ति की साधना है। संघ और संगठन साधना में सहयोगी बनते हैं। प्राचीन काल में एकाकी साधना की पद्धति भी रही है, पर संघ का अपना महत्त्व है। संघ में सारणा-वारणा हो सकती है। आचार्य भी एकाकी साधना कर सकते हैं, पर वर्तमान में एकाकी साधना एक विवेचन का विषय है। साधना की दृष्टि से गण में रहते हुए जो एकाकी अनुभव करें, वो विशिष्ट बात हो सकती है।

त्रिदिवसीय मर्यादा महोत्सव मनाने की परंपरा हमारे धर्मसंघ में रही है। कभी-कभी तो साधु-साध्वियों की संख्या बहुत बढ़ जाती है। कालूगणी जन्म शताब्दी के समय मर्यादा महोत्सव के बाद भी छापर में अनेक साधु-साध्वियां एकत्रित हुए थे। बृहत्तर मुंबई में भी संख्या अच्छी है। मर्यादा महोत्सव एक विशेष समय होता है जब चारित्रात्माओं की संख्या में वृद्धि हो जाती है, गृहस्थ भी काफी संख्या में गुरुदर्शन को पहुँच जाते हैं।

जयाचार्य ने 'गणपति सिखावण' ग्रंथ में थोड़े में अनेक शिक्षाएं चारित्रात्माओं के लिए दी हैं, आचार्य के लिए विशेष शिक्षाएं दी है। जयाचार्य के ग्रंथों में तत्त्वज्ञान, सिद्धांत आदि की अनेक शिक्षाएं भरी हैं। चौबीसी में भक्ति के साथ तत्त्व ज्ञान की बातें भी मिलती है, साधना और सिद्धांत की भी बातें प्राप्त होती हैं। आराधना की ढालों में भी अनेक शिक्षाएँ भरी हैं। हमारे धर्मसंघ में जयाचार्य द्वारा राजस्थानी भाषा में लाखों-लाखों पद्य रचे गए हैं। भिक्षु स्वामी के ग्रंथ भी राजस्थानी भाषा में हैं, गुरुदेव तुलसी ने भी राजस्थानी भाषा में कई साहित्य रचे हैं। साधना से जुड़ा हमारा संघीय जीवन है, शासन के प्रति हमारी भक्ति रहे। चारित्रात्माओं में संघ के विकास का चिंतन रहे, परस्पर सौहार्द का भाव रहे, संयम की साधना और चित्त समाधि रहे। सभी साधु-साध्वियाँ आपस में सहयोग की भावना रखें।

अखिल भारतीय तेरापंथ युवक परिषद् के लिए मुद्रक, प्रकाशक एवं संपादक - **पंकज कुमार डागा** द्वारा मै.जी.के. फाइन आर्ट प्रेस, सी-1, एफआईएफ, पटपड़गंज औद्योगिक क्षेत्र, नई दिल्ली-110092 से मुद्रित तथा 210, दीनदयाल उपाध्याय मार्ग, नई दिल्ली-110002 से प्रकाशित। कार्यकारी संपादक - **दिनेश मरोठी**